ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 21 फरवरी 2016 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 21 फरवरी 2016 से 27 फरवरी 2016

मा.शु. –14 ● वि० सं०–2072 ● वर्ष 58, अंक 60, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 192 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,116 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

डी.ए. वी पक्खोवाल रोड, लुधियाना में लगी नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यशाला

डी.ए. वी. पक्खोवाल रोड, लुधियाना में दो दिवसीय 'नैतिक शिक्षा प्रशिक्षण कार्यशाला' का आयोजन बड़े हर्षोल्लास के साथ किया गया। इस कार्यशाला की देखरेख श्री सत्यपाल आर्य जी ने की। कार्यशाला में प्रथम दिन की अध्यक्षता श्री एच आर गंधार जी सलाहकार, प्रधान डी ए वी कालेज प्रबंधकर्त्री समिति, नई दिल्ली ने की तथा द्वितीय दिवस की अध्यक्षता आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के सहसचिव श्री सत्यपाल आर्य जी ने की। डॉ. वागीश कुमार जी, सत्यपाल आर्य जी, आचार्य प्रमोद योगार्थी जी इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता रहे। इस कार्यशाला में खन्ना, मलेरकोटला, कोट इस्सेखां, लुधियाना के डी ए वी स्कूलों के 320 अध्यापकों ने भाग लिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ आचार्य प्रमोद योगार्थी के ब्रह्मत्व में वैदिक विधि–विधान के अनुसार किए गए वैदिक यज्ञ से हुआ जिसमें श्री एच. आर. गंधार व श्रीमती सुदेश गंधार जी मुख्य यजमान के रूप में रहे। यज्ञ में अन्य डी. ए. वी. स्कूलों के प्रधानाचार्य यजमान रूप में उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त स्थानीय आर्य समाजी कैप्टन वी. के. सयाल, श्रीमती शकुन्तला जी, श्री अक्षय गिरधर जी भी हवन यज्ञ में यजमान रूप में उपस्थित रहे।

परम्परानुसार श्री एच आर गंधार जी, मुख्य वक्ता डॉ. वागीश कुमार जी, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के सचिव श्री सत्यपाल आर्य जी, स्कूल के वाइस चेयरमैन श्री एस. एस. जौहल जी द्वारा ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित की गई।

डी. ए. वी. गान के बाद द्वारा मधुर स्वर में स्वागत गीत गाया गया। स्कूल के वाइस–चेयरमैन श्री एस एस जौहल जी ने तथा दूसरे दिन श्रीमती नीलम कामरा जी ने अतिथियों का स्वागत व आभार प्रकट किया।

श्री एच आर गंधार जी ने छात्रों में नैतिक मूल्य व भारतीय संस्कार जगाने की बात करते हुए अध्यापकों को कक्षा में अपने विषय के प्रति रुचि जगाते हुए पढ़ाने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने सभी विषयों के अध्यापकों को नैतिक शिक्षक बनने की प्रेरणा दी। आज के समय में नैतिक मूल्यों की महत्ता को देखते हुए नैतिक शिक्षा के लिए एक कालांश अवश्य लगाने पर बल दिया।

डॉ. वागीश जी ने नैतिक मूल्यों पर बोलते हुए ईश्वर की सत्ता में विश्वास व नैतिक चरित्र पर बल दिया। उन्होंने कर्म की प्रधानता पर बल दिया। हमारे कर्म ही भक्ति रूप में ईश्वर प्राप्ति का माध्यम हैं। मनुष्य कर्म करने में तो स्वतंत्र है परन्तु उसे अपने किए कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ेगा, इस जन्म में नहीं तो अगले जन्म में। व्याख्यान के उपरांत धर्म, दर्शन, अध्यात्म, विज्ञान संबंधी विषयों पर आधारित शिविरार्थियों की शंकाओं का निवारण किया गया।

आचार्य श्री प्रमोद योगार्थी ने जीवन की गहराइयों को बताते हुए कहा कि जो व्यक्ति जीवन में मृत्यु को याद रखते हुए कर्म करता है, वह सभी अनुचित कार्यों से बचा रहता है। उन्होंने विभिन्न महापुरुषों के उदाहरण देते हुए नैतिक मूल्यों के महत्व पर प्रकाश डाला।

श्री सत्यपाल आर्य जी ने अपने वक्तव्य में शिक्षकों को अपने विद्यार्थियों में रामायण, महाभारत व वेद ग्रन्थों की कहानियों के माध्यम से संस्कारों को पोषित करने की बात कही। समयाभाव के कारण व एकल परिवार होने के कारण हमारे बच्चे इनसे वंचित हैं। नीरोग काया के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए उन्होंने अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि हमें आज बच्चों में राष्ट्रीयता की भावना को विकसित करने की जरूरत है।

'प्रति पुष्टि प्रोफार्मा' के माध्यम से उपस्थित शिक्षकगण ने इस कार्यशाला से प्राप्त ज्ञान व अनुभवों को बताया। और अपने शिक्षण के माध्यम से नैतिक मूल्यों को विकसित करने का संकल्प लिया गया। प्रधानाचार्य श्री मोहन लाल शर्मा जी द्वारा आए अतिथियों धन्यवाद किया गया। लुधियाना क्षेत्र में नैतिक जागरण का बिगुल बजाने के लिए स्कूल की बसों के पीछे कार्यशाला के फलैक्स लगवाए। स्कूल के पांच किलोमीटर के दायरे में ओम् ध्वज लगाए।

कार्यशाला का समापन शांति पाठ से हुआ।

डी.ए.वी. कालांवाली में हुआ वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह

माता पुन्ना देवी डी.ए.वी. सी.सै. पब्लिक स्कूल कालांवाली में कक्कड़ जी के निर्देशन में भव्य वार्षिक पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह के मुख्य अतिथि डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति के निर्देशक श्री जे.पी. शूर जी रहे। अध्यक्षता पंचकूला जोन की रिजनल डाइरेक्टर श्रीमती मधु बहल जी ने की। डी.ए.वी. कॉलेज अबोहर के प्रधानाचार्य डॉ. एस.के. अरोड़ा तथा विधायक सरदार बलकौर सिंह जी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्यातिथि ने सर्वप्रथम विद्यालय के प्रशासनिक विभाग–I का शुभारम्भ करके प्रशासनिक विभाग–II की नीवं रखी। उन्होंने ने विद्यालय प्रशासन की प्रशंसा करते हुए सभी बच्चों, अध्यापकों तथा अभिभावकों को अपने कर्त्तव्यों के प्रति सजग किया। तथा सभी को पूर्ण ईमानदारी से काम करने को कहा।

विद्यालय की प्रधानाचार्य ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए विद्यालय की वार्षिक रिपोर्ट पेश की। अंत में मुख्यातिथि जी ने विद्यालय के प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कार वितरित करके सम्मानित किया। इस कार्यक्रम में बच्चों ने अनेक सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दिखाकर सभी दर्शकों का मन मोह लिया। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने हेतु विद्यालय प्रबन्धक समिति के चेयरमेन श्री खुशीराम सिंगला, श्री दर्शन लाल सिंगला, श्री संजीव बंसल, हरपाल सिंह नंबरदार तथा विद्यालय प्रबन्धक समिति के सभी एल.एम.सी. सदस्य उपस्थित रहे।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

आर्य जगत्

सप्ताह रविवार 21 फरवरी, 2016 से 27 फरवरी, 2016

मनोयुजा धी तथा पार्थिव और दिव्य सम्पत्ति

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

त्वं धियं मनोयुजं, सृजा वृष्टिं न तन्यतुः।
त्वं वसूनि पार्थिवा, दिव्या च सोम पुष्यसि।।

ऋग् ९.१००.३

ऋषिः रेभसूनू काश्यपौ। देवता पवमानः सोमः। छन्दः अनुष्टुप्।

● **(सोम)** हे सोम परमेश्वर!, **(त्वं)** तू, **(मनोयुजं)** मन से संयुक्त, **(धियं)** बुद्धि और क्रिया को, **(सृज)** उत्पन्न कर, **(तन्यतुः)** विद्युत्, **(वृष्टिं न)** जैसे वर्षा को उत्पन्न करती है, **(त्वं)** तू, **(पार्थिवा)** पार्थिव, **(दिव्या च)** और दिव्य, **(वसूनि)** ऐश्वर्यों को, **(पुष्यसि)** पुष्ट कर।

● हे सोम परमेश्वर! तुम्हारे अन्दर अपूर्व सर्जनात्मक शक्ति है, तुम सम्पूर्ण चराचर जगत् का ही सर्जन करनेवाले हो। अतः मेरी तुमसे प्रार्थना है कि तुम मेरे अन्दर मनःसंयुक्त 'धी' का सर्जन करो। वैदिक 'धी' में बुद्धि और क्रिया–शक्ति दोनों सम्मिलित हैं। मन का कार्य संकल्प और विचार करना, तथा बुद्धि का कार्य अध्यवसाय या निश्चय करना है। हमारी बुद्धि मनःसयुक्त हो, अर्थात् हम जो कुछ निश्चय करें वह मन से सोच विचार के उपरान्त ही करें, क्योंकि बिना विचारे सहसा किया गया निश्चय प्रायः भ्रान्त होता है। इसी प्रकार हमारी क्रिया भी मनःसंयुक्त हो, अर्थात् हम कर्म भी विचार–पूर्वक ही करें। जैसे विद्युत् मेघ से वृष्टि उत्पन्न करती है, वैसे ही तुम हमारे अन्दर मनःसंयुक्त 'धी' को उत्पन्न करो, 'धी' की वर्षा करो। उस 'धी' की वृष्टि में संस्नात होकर हम अपने अन्दर प्रबोध, चैतन्य, स्फूर्ति, प्रफुल्लता को अनुभव करें।

हे सोम प्रभु! तुम ऐश्वर्यशाली हो। तुम मुझे पार्थिव और दिव्य दोनों प्रकार की सम्पत्ति प्रदान करो। पार्थिव ऐश्वर्यों में हम तुमसे धन–धान्य, पुत्र, पशु, दुग्ध, घृत, वस्त्र, उत्तम गृह, भूमि, खेत, बाग–बगीचे आदि की समृद्धि चाहते हैं। वेद ने गृह–समृद्धि का चित्रांकन करते हुए कहा है कि हमारी चिरकाल तक स्थिर खड़ी रहनेवाली शाला में अश्व हों, गौएँ हों, सूनृता हो, अन्न हो, घृत हो, वत्स हों, कुमार हों, तरूण हों, दूध से भरे घड़े हों, दही के मटके हों। हमारे घरों में तुम ऐसा ही चित्र ला दो। हम समृद्धि–पूर्वक इस प्यारे लोक में हँसते–खेलते, नाचते–गाते दीर्घ जीवन पाते हुए आगे बढ़ें। साथ में तुम हमें दैवी सम्पत् भी प्रदान करो, जिसे भगवद्गीता में अभय, सत्व–संशुद्धि, ज्ञानयोग–व्यवस्थित, दान, दम, यज्ञ, स्वाध्याय, तप, आर्जव, अहिंसा, सत्य, अक्रोध, त्याग, शान्ति, अपैशुन, भूतदया, अलोलुपत्व, मार्दव, ह्री, अचापल्य, तेज, क्षमा, धृति, शौच, अद्रोह, अतिमानिता का अभाव, इन नामों से परिगणित किया गया है। इन पार्थिव और दिव्य उभयविध ऐश्वर्यों को हमें प्रदान करके तुम सदा इन्हें परिपुष्ट करते रहो, जिससे कभी ये क्षीण न हों, प्रत्युत अधिकाधिक बढ़ते ही जाएँ। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु - भक्ति

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

हम पढ़ रहे थे कि मनुष्य का शरीर ही भगवान का मन्दिर है, जहां सचमुच परमात्मा के दर्शन किए जा सकते हैं। परमात्मा हर स्थान और वस्तु में होते हुए भी हर जगह दृष्टिगोचर नहीं सकता, उसके दर्शन केवल इस मन्दिर में ही हो सकते हैं।

भगवान के इस मन्दिर में पूजा और भक्ति के लिए जाने से पूर्व अत्यन्त आवश्यक है कि मन्दिर की सफाई की जाए। पूजा पाठ का स्थान स्वच्छ ही होना चाहिए। सफाई दो प्रकार की है बाह्य सफाई स्वच्छ जल इत्यादि से हो जाती है परन्तु भीतरी सफाई के लिए प्रातः 4 बजे बिस्तर से अवश्य उठ जाने का नियम बना लेना चाहिए और फिर शौच आदि से निवृत होकर दाँत साफ करने चाहिएँ। फिर व्यायाम, आसन इत्यादि करने चाहिएँ जिससे शरीर बिल्कुल थक तो न जाए परन्तु इसके प्रत्येक अंग में स्फूर्ति अवश्य आ जाए। फिर स्नान करना चाहिए।

अब आगे...

भगवान का मन्दिर

नाड़ी–शुद्धि–

पेट की शुद्धि के पश्चात नाड़ी–शुद्धि की बारी आती है और इसके लिए नाना प्रकार के प्राणयाम बताये गए हैं। भस्त्रा प्राणायाम से नाड़ियों के मल नाश होते हैं।

1. जिस प्रकार धौंकनी में वायु भरी और निकाली जाती है, उसी प्रकार भस्त्रा होता है। नासिकाओं के द्वारा पहले शनैः–शनैः और फिर तेजी के साथ जल्दी–जल्दी श्वास लिये जाते हैं। एक समय में दस मिनट से अधिक भस्त्रा नहीं करना चाहिए और केवल ऐसे स्थान पर बैठकर भस्त्रा का अभ्यास करना चाहिए, जहाँ की वायु शुद्ध और और गर्मी अधिक न हो।

रेचक, कुंभक, पूरक से धारणा–शक्ति बढ़ती है और छोटी–छोटी–और अति सूक्ष्म नाड़ियों के दोष दूर होते रहते हैं, परन्तु आरम्भ करने से पूर्व इरनकी विधि सीख लेनी चाहिए। हाँ, इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि प्राणायाम सीखते–सीखते कहीं किसी दम्भी के जाल में न फँस जायँ। आजकल योग–विद्या के नाम पर काफी ठगी हो रही है, और सभ्य समाज में भी कुछ ऐसे लोग घुस आए हैं, जिन्होंने कितने ही प्रभु–प्रेमियों को सदा का रोगी सा बना दिया है। ये लोग हठयोग के ऐसे प्रयोग करते हैं जिनसे भगवान् के इस मन्दिर का सत्यानाश हो जाता है। अतएव उनसे बचना चाहिए और यह समझ लेना चाहिए कि भगवान् के मन्दिर की सफ़ाई का अर्थ यह नहीं कि मन्दिर को ही गिरा दिया जाए। 'योग–दर्शन' के साधनापाद में लिखा है–"जब मनुष्य प्राणायाम करता है तब प्रतिक्षण उत्तरोतर काल में अशुद्धि का नाश और ज्ञान का प्रकाश होता है।" इसी प्रकार भगवान् मनु ने भी लिखा है कि – "जैसे अग्नि में तपाने से सुवर्णादि धातुओं का मल नष्ट होकर शुद्ध होता है, वैसे ही प्राणायाम से इन्द्रियों के सब दोष क्षीण होकर निर्मल होते जाते हैं।"

मन की शुद्धि

नाड़ी–शुद्धि के अतिरिक्त मन की शुद्धि भी आवश्यक है। उपनिषद् में बताया है कि मन अन्न से बनता है। वैसे तो सारा शरीर ही अन्न से बनता है, परन्तु शरीर अन्न के स्थूल भाग से बनता है और मन सूक्ष्म भाग से। जिस भावना अथवा जिस साधन से अन्न कमाया जाएगा, उसका सूक्ष्म प्रभाव मन पर अवश्य पड़ेगा। यदि अन्न कमाने में झूठ, दम्भ, मक्कारी, या पर–पीड़ा को काम में लाया गया है तो उस अन्न के खाने वाले के मन पर वैसा ही प्रभाव पड़ेगा। यह प्रभाव शीघ्र ज्ञात हो या न हो, परन्तु किसी–न–किसी समय यह प्रभाव जागरित होकर मनुष्य को वैसे ही कर्म करने पर बाधित कर देता है, यह निश्चित बात है। वह खोटे अन्न का ही तो प्रभाव था, जिसने भीष्मपितामह जैसे व्रतधारी बालब्रह्मचारी को विवश कर दिया कि वह सत्य और न्याय का पक्ष छोड़कर अत्याचारी दुर्योधन का साथ दे। भीष्म पितामाह ने स्वयं महाभारत में अन्न के इस प्रभाव को माना है इसलिए मन की शुद्धि के लिए सबसे पहली आवश्यक बात यह है कि हमारा अन्न शुद्ध हो, यह धर्म तथा अपने बाहुबल से कमाया गया हो। इसके साथ अन्न ऐसा खाया जाय जो विकार पैदा करने वाला न हो, तामसिक न हो। जो लोग लाल मिर्च अथवा कॉफी का अधिक प्रयोग करते हैं और मांस–मद्य इत्यादि अभक्ष्य खाते हैं उनके स्वभाव में कड़वापन बढ़ जाता है, सहनशीलता कम हो जाती है और उनका मन अधिक चंचल हो उठता है। वे

देर तक एक ही आसन में बैठ नहीं सकते। इटली के पाइथागोरस (Pythagoras) का यह सिद्धान्त था कि मनुष्य–मन का निर्माण उन वस्तुओं पर निर्भर है, जो भोजन द्वारा उसके पेट में जाती हैं। महर्षि दयानन्द ने इसलिए मद्य–मांस का निषेध स्थान–स्थान पर किया है।

मन की शुद्धि का पूरा उपाय यह है कि इसको बुरे संकल्पों तथा विचारों से अलग रक्खा जाए। मन एक ऐसी शक्ति है, जो कभी भी चुपचाप होकर बैठ नहीं सकती। इसीलिए इसे गीता में "चंचल तथा प्रमथन स्वभाव वाला"— कहा गया है। यह निश्चल तो होगा नहीं, इसे विचारों से शून्य करने के लिए भी बहुत लम्बा समय लगेगा। इसलिए पहले मन को शुभ–संकल्पों में लगाना चाहिए। यजुर्वेद में 34वें अध्याय में इसलिए छः ऐसे मन्त्र आये हैं, जिनमें बारम्बार यही प्रार्थना है कि **''तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु''** अर्थात् मेरा मन सदा शिव–संकल्पवाला हो।

जब सत्संकल्प तथा सुविचार मन में लाए जाएँगे तो फिर खोटे विचार मन में कोई स्थान न पाकर स्वयमेव लौट जाएँगे–

प्रीतम–छवि नैनन बसी,
पर–छवि कहाँ समाय।
भरी सराय 'रहीम' लखि,
आप पथिक फिरि जाय।।

ब्रह्मचर्य–

इस प्रकार जब मन्दिर के बाहर और भीतर की सफ़ाई हो जाती है, तब इस मन्दिर में बैठकर भगवान् की आराधना का अधिकार भक्त को प्राप्त हो जाता है, तब वह प्रभु–भक्ति के महान् द्वार में प्रवेश करता है, तब वह उपासक बनता है, प्रभु के समीप बैठता है, और भगवान् के निकटतर हो जाता है। परन्तु इन सब बातों के साथ यह आवश्यक बात सदा अपने सम्मुख रखनी चाहिए कि प्रभु–मन्दिर की नींव ब्रह्मचर्य है। लोग अपने वास्तविक तत्त्व और जौहर को बाहर फेंकते हैं और इसकी रक्षा नहीं करते। वे अपनी इस नादानी पर रोएंगे। वे क्षणिक, झूठे तथा 'कल्पित आनन्द' के लिए अपना अनमोल रत्न गँवा रहे हैं। वे अपने हाथों से अपने पाँव पर कुल्हाड़ा चलाकर अपना सत्यनाश कर रहे हैं। वीर्य शरीर में मन और प्राण ही की नहीं, अपितु आत्मा को भी शक्ति देनेवाली वस्तु है। इस शरीर में आत्मा को यदि कुछ प्राप्त हो सकता है तो वीर्य ही से। आत्म है सूक्ष्म, से वह किसी स्थूल वस्तु को तो ग्रहण करेगा नहीं, सूक्ष्म को ग्रहण करेगा और वह वीर्य ही है। जब इसका भण्डार शरीर में जमा जो जाता है तो इसका फिर इत्र खिंचता है और उससे ओज पैदा होता है। यह ओज एक सूक्ष्म तत्त्व है, जिसे आत्मा ग्रहण करता है और महाबलवान् होकर ओजस्वी बन जाता है, परमात्मा की मित्रता का अधिकारी बनकर उसके बराबर बैठने के लिए कहता है–

ओजोऽसि ओजो महि धेहि ।

अतएव, प्रभु–मन्दिर के इस मूलतत्त्व की ओर विशेष ध्यान देना होगा। स्थूल भोजन या अन्न का किस प्रकार सूक्ष्म तत्त्व बनता है, उसकी विधि यह है–

जो अन्न खाया जाता है सबसे पूर्व इसका रस बनता है। रस फिर रक्त में परिवर्तित हो जाता है। रक्त का इत्र खिंचता है तो फिर मांस बनता है, मांस से मेद, मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा और मज्जा से वीर्य। इस वीर्य की मात्रा बहुत थोड़ी होती है। यदि इसे शरीर में सँभालकर रक्खा जाय, बुरे विचारों, गंदी कहानियों और अश्लील सिनेमाओं से बचाया जाय और इसका रुख नीचे की बजाए ऊपर की ओर किया जाए, तब यह वीर्य बहुत देर के पश्चात् परिपक्व होकर 'ओज' बनने लगता है। ओज भी दो प्रकार का होता है। एक 'पर ओज' दूसरा 'अपर ओज'। यह ओज अन्त में सूक्ष्म हो जाता है और आत्मा के काम आता है। वेद भगवान् ने तो ब्रह्मचर्य को भी प्रभु प्राप्ति का बड़ा साधन बताया है और स्वामी दयानन्द जी ने लिखा है कि जो गृहस्थी नियमानुकूल चलते हैं और मर्यादा में रहते हैं, उनकी गणना भी ब्रह्मचारियों में ही होती है।

अतएव वीर्य की बहुमूल्यता को आँकते हुए इसे अपनी आत्मा के लिए सुरक्षित रखना चाहिए।

यही है भगवान् के मन्दिर का मूल–तत्त्व।
इसके गिरने से मन्दिर गिरने लगता है
और जब मन्दिर गिरने लगे तो पुजारी का
सर्वनाश सामने प्रलय–ताण्डव करने लगता है।
इसलिए पूरे यत्न से इसकी रक्षा करनी चाहिए।

क्रमशः....

गृहस्थाश्रम–वैदिक स्वर्ग का मूलाधार

● **सूर्य देव चौधरी**

भारत ही नहीं बल्कि विश्व के सभी सम्प्रदायों में स्वर्ग का वर्णन आता है। उनका स्वर्ग नाना प्रकार के सुखोपभोग के साधनों से पूरित पृथिवी से दूर एक लोक विशेष है, जो मरने के बाद किसी को उसके पुण्य कर्म के फलस्वरूप प्राप्त होता है। लेकिन वैदिक स्वर्ग की अवधारणा इससे भिन्न है। वैदिक स्वर्ग किसी दूसरे लोक में अवस्थित नहीं है, बल्कि इसी धरती पर है। वेदों के अनुसार सुख–विशेष की प्राप्ति का नाम ही स्वर्ग है और यह मरने के बाद नहीं बल्कि इसी जीवन में प्राप्त होता है। वैदिक स्वर्ग का एक चित्र अथर्ववेद में इस प्रकार खींचा गया है:–

घृतह्रदा मधुकूला सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना। एतास्त्वा धारा उपयन्तु सर्वाः स्वर्गे लोके मधुमत्पिन्वमानाः।।

अथर्व 4/34/6

जहाँ घी एवं मधु से पूर्ण सरोवर हों, दूध–दही एवं शुद्ध जल की नदियाँ प्रवाहित हो रही हों तथा आनन्द को उत्पन्न करने वाली धाराएँ सदा वर्तमान हों, वही स्वर्ग लोक है।

इसी स्वर्ग का वर्णन चाणक्य ने इस प्रकार किया है–**यस्य पुत्रो वशीभूतो भार्या छन्दानुगामिनी।**
विभवे यश्च संतुष्टस्तस्य स्वर्ग इहैव हि।।
चाणक्य नीति (2/3)

जिसका पुत्र वश में हो, स्त्री आज्ञाकारिणी हो और विपुल ऐश्वर्य हो, उसको निश्चित रूप से इस संसार में ही स्वर्गलोक की प्राप्ति हो जाती है।

पाश्चात्य विद्वान Hare ने मानो इसी स्वर्ग का वर्णन करते हुए लिखा है–'To Adam paradise was home and to the good among his descendants home is paradise.' अर्थात् आदम का घर स्वर्ग में था, लेकिन उसकी उत्तम संतान अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यों का घर ही स्वर्ग है।

स्वर्ग की इसी अवधारणा को मूर्त रूप देने के लिए वैदिक व्यवस्था में मनुष्य जीवन की सम्पूर्ण आयु को चार आश्रमों में विभाजित किया गया है। वे आश्रम क्रमशः ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास हैं। इन आश्रमों का विभाजन बड़ा ही वैज्ञानिक है। जीवन के सभी तरह के सुखों का इसमें सम्यक् संतुलन है, क्योंकि यह विभाजन मनुष्य की अवस्थाओं और तदनुरूप कार्य की योग्यताओं पर आधारित है। ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचर्य धारण करते हुए विद्या अध्ययन करने का विधान है जिससे मनुष्य में शारीरिक एवं आत्मिक बल का विकास होता है। शारीरिक एवं आत्मिक बल के बिना जीवन में कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है। इसलिए कहा गया है–**'शरीरोऽयं खलु धर्मस्य साधनं'** और **'नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः'** अर्थात् स्वस्थ शरीर ही धर्म का साधन है और यह आत्मा बलहीन को प्राप्त नहीं होती है। इससे ब्रह्मचर्य आश्रम का महत्व स्पष्ट हो जाता है। ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति तक मनुष्य युवावस्था को प्राप्त कर लेता है। तब परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार धर्मपूर्वक सृष्टिक्रम को आगे बढ़ाने के लिए और साथ ही सांसारिक सुख भोगने के लिए विवाह करके मनुष्य दूसरे आश्रम यानी गृहस्थाश्रम में प्रवेश करता है। गृहस्थ जीवन के सम्पूर्ण कर्त्तव्यों का सम्यक् निर्वहन करने के बाद घर की सम्पत्ति एवं उत्तरदायित्व को अपने ज्येष्ठ पुत्र को सौंपकर मनुष्य को 51वें वर्ष में तीसरे वानप्रस्थ आश्रम में चले जाने का वैदिक विधान है। वहाँ पर पारिवारिक मोहमाया से परे तपस्वी जीवन व्यतीत करते हुए यथाशक्ति समाज एवं राष्ट्र के कल्याण में वह अपना योगदान करता है। इस तीसरे आश्रम में वैराग्य का पूर्ण अभ्यास हो जाने पर मनुष्य को जीवन के अन्तिम भाग में संन्यास आश्रम में प्रविष्ट होकर अभ्यास, स्वाध्याय और प्रवचन से संसार का कल्याण करना चाहिए। पहले जब इस आश्रम व्यवस्था का पूर्ण पालन होता था तो यह आर्यावर्त्त देश स्वर्गिक सुख से पूरित था और यहाँ के लोग देव कहलाते थे। आज भी यदि इस आश्रम व्यवस्था का सम्यक् पालन हो, तो यह धरती अवश्य ही स्वर्ग में परिणत हो जाएगी।

हालाँकि सभी आश्रमों का अपना–अपना महत्त्व है, लेकिन इन सभी आश्रमों में गृहस्थाश्रम की महिमा अधिक है। इसलिए गृहस्थाश्रम को सभी आश्रमों में श्रेष्ठ कहा गया है। मनुजी ने कहा है–

यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितम्।।
(मनु. 6/90)

यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व जन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः।।
यस्मात्त्रयोप्याश्रमिणो दानेनान्नेन चान्वहम्।
गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही।।
स संधार्य प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः।।
(मनु. 3/77–79)

जैसे नदियाँ एवं बड़े–बड़े नद समुद्र में जाकर स्थित होते हैं, उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थाश्रम से आश्रय पाकर स्थिर होते हैं। जैसे सभी जीवधारी वायु पर अश्रित रहते हैं, उसी प्रकार सभी आश्रम गृहस्थाश्रम पर आश्रित हैं। चूँकि दान एवं अन्नादि के द्वारा गृहस्थ ही ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ एवं संन्यास तीनों आश्रमों का पालन करता है, इसलिए गृहस्थाश्रम ज्येष्ठ अर्थात् बड़ा है। अतः मोक्ष एवं सांसारिक सुख की इच्छा करने वाले व्यक्ति को प्रयत्न पूर्वक गृहस्थाश्रम को धारण करना चाहिए क्योंकि निर्बल व्यक्ति में गृहस्थाश्रम को धारण करने की योग्यता नहीं होती।

संसार में सभी व्यवहारों का आधार गृहस्थाश्रम ही है। यदि गृहस्थाश्रम नहीं होता, तो धर्म–पूर्वक विवाह एवं संतानोत्पत्ति नहीं होती और संतानोत्पत्ति के अभाव में ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की कल्पना भी कैसे की जा सकती है? कुछ लोग यह कह सकते हैं कि संतानोत्पत्ति की भावना मनुष्यों में स्वाभाविक है और गृहस्थाश्रम एवं विवाह के बिना भी आपसी शारीरिक सम्बन्ध से संतानोत्पत्ति हो सकती है। लेकिन ऐसी स्थिति में सर्वत्र अव्यवस्था का साम्राज्य हो जाएगा। उत्तरदायित्व के अभाव में एक तरफ बच्चों को अनाथ की तरह जीना पड़ेगा तो वहीं दूसरी तरफ समाज में व्यभिचार की वृद्धि होने से स्त्रियों की हालत नरक से भी बदतर हो जाएगी। व्यभिचार के फल स्वरूप संतानें भी निर्बल एवं अल्पायु होंगी और वृद्धावस्था में कोई किसी की देखभाल करनेवाला नहीं होगा। सारा मानव समाज नष्ट–भ्रष्ट होकर पशु समाज अथवा नरक में परिणत हो जाएगा। अतः विवाहपूर्वक संतानोत्पत्ति से ही मानव समाज की रक्षा होती है जो सिर्फ गृहस्थाश्रम में ही सम्भव है। इसीलिए गृहस्थाश्रम सभी आश्रमों एवं

सुव्यवस्थित मानव समाज का आधार है।

निश्चित रूप से गृहस्थाश्रम की श्रेष्ठता सिद्ध है। लेकिन यह श्रेष्ठता तभी सुरक्षित रह सकती है और वैदिक स्वर्ग का आधार बन सकती है, जब स्त्री–पुरुष अर्थात् पति–पत्नी दोनों अपने–अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् पालन करने में तत्पर रहें। इसके लिए यह आवश्यक है कि विवाह के पूर्व लड़की एवं लड़के दोनों के रूप, गुण, कर्म, स्वभाव, ज्ञान एवं व्यवहार को सम्यक् मिला लिया जाय। साथ ही लड़की एवं लड़के की सहमति भी ले ली जाय। इसका प्रयोजन यह है कि विवाह के बाद उन दोनों में परस्पर विरोध न हो। यदि दानों में विरोध होगा तो उन्हें ही दुख होगा और आपस में सहमति रहने पर वे दोनों प्रसन्न एवं सुखी रहेंगे क्योंकि–

संतुष्टो भार्यया भर्त्ता भर्त्रा भार्या तथैव च।
यस्मिनेव कुले नित्यं कल्याणं तत्र वै ध्रुवम्।।

(मनु. 3/60)

अर्थात् जिस कुल में पत्नी से पति एवं पति से पत्नी परस्पर संतुष्ट रहती है, उसी कुल में निश्चित रूप से कल्याण का निवास होता है। इसके विपरीत होने पर प्रभाव भी विपरीत ही पड़ेगा। इसलिए भारत में पहले स्वयंवर विवाह की प्रथा थी, जिसमें लड़का एवं लड़की दोनों को विद्या, विनय, शील, रूप, आयु, बल, कर्मणा वर्ण एवं शरीर के अनुसार जीवन–साथी चुनने का अधिकार था। उनके गुण–कर्म–स्वभाव का मिलान ब्रह्मचर्य आश्रम की समाप्ति के कुछ पूर्व कर लेना चाहिए ताकि ब्रह्मचर्य की समाप्ति पर समावर्त्तन संस्कार के बाद विवाह संस्कार में असुविधा न हो अथवा दुखदायी बेमेल विवाह न होने पाए।

विवाह के बाद संतानोत्पत्ति के लिए नियमपूर्वक गर्भाधान संस्कार करना उचित है। गर्भ की स्थिति हो जाने पर पति–पत्नी को प्रयत्न पूर्वक संयमित जीवन जीना चाहिए, क्योंकि गर्भ में ही भावी संतान पर संस्कार पड़ने शुरू हो जाते हैं। महाभारत की यह घटना प्रायः सभी को विदित होगी कि अभिमन्यु गर्भ में ही चक्रव्यूह–भेदन की क्रिया सीख लिया था। हुआ यों था कि जब अभिमन्यु गर्भ में था, तभी एक दिन अर्जुन द्रौपदी को चक्रव्यूह भेदन की क्रिया बतला रहे थे। सातवें द्वार के भेदन के समय द्रौपदी को नींद आ गई और वह सुन न सकी, जिसके कारण अभिमन्यु को छठे द्वार के भेदन तक ही ज्ञान हो पाया। इससे यह सिद्ध होता है कि पुरुष एवं स्त्री के और विशेष कर स्त्री के कार्यकलापों का गर्भस्थ शिशु पर तदनुरूप प्रभाव पड़ता है। इसलिए गर्भकाल में भावी संतान पर अच्छे संस्कार डालने के लिए चौथे महीने में पुंसवन एवं छठे या आठवें महीने में सीमान्तोन्नयन संस्कार करने का वैदिक विधान है। पुंसवन संस्कार बल एवं वीर्य की वृद्धि के लिए एवं सीमान्तोन्नयन संस्कार स्त्री को संतुष्ट एवं प्रसन्न रखने के लिए किया जाता है।

जब संतान का जन्म हो, तो विधिपूर्वक जातकर्म संस्कार करना चाहिए। इसमें विशेष प्रावधान के अन्तर्गत संतान का पिता उसके कान में 'वेदोसीति' शब्द बोलता है, जिसका अर्थ है कि तुम्हारा नाम वेद (ज्ञान) है और साथ ही सोने की शलाका को घी और मधु में डुबाकर संतान की जीभ पर 'ओ३म्' शब्द लिखता है। इसका महत्त्व यह है कि बच्चे को प्रारम्भ से ज्ञान की ओर प्रवृत किया जाय ताकि आगे चल कर वह ज्ञान का उपासक बने। मधु, घी एवं सोने के प्रयोग का आशय यह है कि बच्चे के जीवन में घी एवं मधु की तरह बल एवं बुद्धि वर्द्धक भोजन एवं सोना यानी धन की पर्याप्त उपलब्धता बनी रहे। ओम् लिखने का तात्पर्य यह है कि बालक ईश्वर–भक्त हो और ईश्वर को सदा याद रखे क्योंकि 'ओ३म्' ईश्वर का मुख्य नाम है। इसीलिए यजु (40/15) में कहा गया है–**'ओम् क्रतो स्मर'** अर्थात् हे कर्मशील जीव! तू ओम् का स्मरण कर। जातकर्म संस्कार में इस तरह ओम् लिखने का विधान संतान को प्रारम्भ से ही इसी ओम् की याद दिलानी है। जन्म से कुछ दिन तक बच्चे एवं माता की विशेष देखभाल करनी आवश्यक है। बाद में यथासमय संतान का नामकरण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म (मुंडन), उपनयन एवं विद्यारम्भ संस्कार करना माता–पिता का कर्त्तव्य है ताकि बच्चे का सम्यक् प्रकार बौद्धिक एवं शारीरिक विकास हो और उसमें अच्छे संस्कार पड़ें।

कहा जाता है कि परिवार मनुष्य की प्रथम पाठशाला है। यहाँ से बालक के रूप में मनुष्य जो कुछ सीखता है, उसका संस्कार अन्त तक उसके साथ रहता है। बच्चे को सुसंस्कारित करने के लिए गृहस्थ स्त्री–पुरुष को पत्नी–पति तथा माता–पिता के रूप में अपने कर्त्तव्य का सम्यक् पालन करना भी आवश्यक है। सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य को एक जीवन–साथी की आवश्यकता होती है। पति के लिए पत्नी उसका आजीवन मित्र होती है। पति के लिए पत्नी से बढ़कर और कोई मित्र नहीं होता। सच ही कहा है–**'नास्ति भार्यासमो बंधुः'** (महा.शा. 144/16) पति के हृदय में अपने इस जीवन–मित्र के लिए अगाध प्रेम होना चाहिए। इस स्नेह–वारि के द्वारा सिंचित परिवार रूपी बेल निरन्तर वृद्धि एवं कल्याण को प्राप्त करती है। मनुजी ने कहा है–

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभर्देवरैस्तथा।
पूज्या भूषयितव्याश्च बहु कल्याणमीप्सुभिः।।
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राऽफला क्रिया ।।

मनु. 3/55–56

अपना कल्याण चाहने वाला पिता, भाई, पति, देवर आदि को घर में स्त्रियों का वस्त्र–आभूषण द्वारा सत्कार करना चाहिए, क्योंकि जिस घर में स्त्रियों का सत्कार एवं सम्मान होता है, वहाँ दिव्य गुण युक्त पुरुषों का वास होता है और जहाँ पर इनका सत्कार नहीं होता, वहाँ सभी क्रियाएँ निष्फल एवं निरर्थक होती हैं। अतः पति का कर्त्तव्य है कि वह सदा पत्नी के साथ प्रेमपूर्वक व्यवहार करे और उसे संतुष्ट रखे।

पति–पत्नी गाड़ी के दो पहिए के समान होते हैं। गाड़ी ठीक से चले, इसके लिए आवश्यक है कि दोनों पहिए अपना काम ठीक–ठीक करें। जब पति अपने कर्त्तव्य का पालन करता है तो यह आवश्यक है कि पत्नी भी अपने कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक हो। पत्नी के कर्त्तव्य का वर्णन करते हुए मनुजी ने लिखा है–

नास्ति स्त्रीणां पृथक् यज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्।
पति शुश्रूयते येन तेन स्वर्गे महीयते।।

(मनु. 5/155)

स्त्रियों के लिए पति से पृथक् कोई यज्ञ, व्रत या उपवास नहीं है। केवल पति की सेवा से ही उसे स्वर्ग यानी सुख–विशेष की प्राप्ति होती है, क्योंकि 'सततं देववत् पतिः' (मनु. 5/154) अर्थात् पत्नी के लिए पति ही देवता होता है। स्त्रियों के और कर्त्तव्यों का वर्णन करते हुए महर्षि मनु ने आगे लिखा है–

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया।
सुसंस्कृतोपस्करया व्यये चामुक्त हस्तया।।

(मनु.5/150)

स्त्री सदा प्रसन्न मन से गृह–कार्यों को दक्षता पूर्वक सम्पन्न करे, उत्तम तरीके से गृह–सज्जा करे और आय को ध्यान में रखते हुए आवश्यकतानुसार खर्च करे।

प्रायः कटु एवं अप्रिय वचनों के कारण बहुत बडा अनर्थ हो जाता है। महाभारत की घटना को प्रायः सभी जानते होंगे। द्रौपदी ने दुर्योधन को अंधे का अंधा कहकर पुकारा था, जो दुर्योधन के साथ उसके पिता एवं द्रौपदी के श्वसुर धृतराष्ट्र के लिए अप्रिय एवं कटु शब्द था। इसी के प्रतिशोध में दुर्योधन ने पाण्डवों से वैर ठाना, जिसकी अन्तिम परिणति महाभारत के युद्ध के साथ भारतवर्ष के सर्वस्व विनाश के रूप में हुई। अतः वेदों ने पत्नी का कर्त्तव्य बतलाते हुए कहा–

जाया पत्ये मधुमतिं वाचम् वदतु शान्तिवाम्।।

(अथर्व. 3/30/2)

पत्नी पति के लिए शान्तिदायक मीठी वाणी बोले। यदि पत्नी मीठी वाणी बोलेगी तो कोई कारण नहीं कि पति कटु वाणी का प्रयोग करेगा। जब पति–पत्नी दोनों मीठी वाणी बोलेंगे तो घर में प्रेम की गंगा प्रवाहित होती रहेगी और तब वे वेद के इस आदेश को चरितार्थ कर रहे होंगे–

इहेमाविन्द्र सं नुद चक्रवाकेव दम्पति

(अथर्व. 14/2/64)

अर्थात् पति–पत्नी दोनों चकवा–चकवी की भाँति एक–दूसरे से प्रेम करें।

लेकिन स्त्री पुरुष सिर्फ पति–पत्नी ही नहीं होते, बल्कि माता–पिता भी होते हैं। इसलिए माता–पिता के रूप में भी उनका कुछ विशेष कर्त्तव्य है जो गृहस्थाश्रम को स्वर्ग में परिणत करने के लिए आवश्यक है।

गृह–प्रधान होने के कारण एक पिता का कर्त्तव्य है कि घर के सभी जनों पर समदृष्टि रखकर उनका पालन–पोषण करे। संतानों को अच्छी शिक्षा देकर संसार रूपी संग्राम में विजयी होने के लिए उन्हें योग्य बनाना भी पिता का एक विशेष कर्त्तव्य है। पिता के रूप में अपने कर्त्तव्यों का पालन करने के लिए पुरुष में आवश्यक गुणों का वर्णन करते हुए अथर्ववेद (7–60–1) में कहा गया है:–

ऊर्जं बिभ्रद् वसुवनिः सुमेधा अघोरेण चक्षुषा मित्रियेण।

गृहानैमि सुमना वन्दमानो रमध्वं मा बिभीत् मत्।।

मैं गृह–स्वामी शक्ति को धारण करता हुआ, धन को अर्जन करने वाला, उत्तम धारणवती बुद्धिवाला, क्रोध रहित, स्नेह पूर्ण दृष्टि से देखनेवाला, सुन्दर मनवाला और स्तुतिप्रधान जीवनवाला होकर इस गृहस्थाश्रम को धारण करता हूँ। हे गृहवासियों! मुझसे डरो मत, बल्कि प्रसन्नता पूर्वक आनन्द से रहो।

अब हमें यह देखना है कि गृहस्थ पुरुष को पिता के रूप में अपने कर्त्तव्यों का पालन करने में ये गुण किस प्रकार सहायक होते हैं। निर्बल व्यक्ति गृहस्थाश्रम के भार को वहन नहीं कर सकता है, जैसा कि 'योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः' (मनु. 3/79) कहकर स्पष्ट किया गया है। अतः एक परिवार का पालन करने के लिए पिता में बल का होना आवश्यक है। इसलिए इस मंत्र में पिता का पहला गुण शक्ति–धारण बतलाया गया है। केवल बल से ही गृह–पालन नहीं हो सकता है। इसके लिए धन भी अति आवश्यक है। धन के अभाव में गृहस्थ–जीवन की कल्पना भी दुष्कर है। इसलिए दूसरे गुण के रूप में पिता को 'वसुवनि' अर्थात् धन का अर्जन करने वाला कहा गया है। गृह–जीवन में अनेक जटिल समस्याएँ आती रहती हैं। उसका समाधान उत्तम बुद्धि से ही सम्भव है। उत्तम बुद्धि मनुष्य की महती सम्पत्ति है। इसलिए तीसरे गुण के रूप में कहा गया कि पिता को उत्तम बुद्धिवाला होना चाहिए। एक पिता के व्यवहार में क्रूरता नहीं होना चाहिए। उसका मुखमंडल सदा सौम्य होना चाहिए। वह स्नेहपूर्ण दृष्टि से सबको देखे ताकि उसके पास घर के किसी सदस्य को आने में डर न लगे। इस मंत्र के अन्त में 'मा बिभीत् मत्' शब्दों से पिता के इस गुण की ओर भी एक संकेत है। पिता का पाँचवा गुण 'सुमनाः' अर्थात् उत्तम मनवाला है। एक पिता को अपने मन में कभी दुर्गुण एवं दुर्वासनाओं को स्थान नहीं देना चाहिए। ये मनुष्य को पतन के मार्ग पर ढकेलते हैं। मनुष्य जीवन पतन के लिए नहीं, बल्कि उत्थान के लिए मिला है। एक पिता को यह सदा याद रखना चाहिए–'उद्यानं ते पुरुष नावयानम्' (अ. 8/1/6) अर्थात् हे पुरुष! तू ऊपर उठने के लिए है, नीचे गिरने के लिए नहीं। संक्षेप में 'सुमना' शब्द आत्म–संयम की शिक्षा देता है। पिता का छठा गुण 'वन्दमान' है। एक पिता को स्तुति–प्रधान जीवन वाला होना चाहिए। उसका चरित्र ऐसा होना चाहिए कि उसकी सभी लोग प्रशंसा करें। उसे स्वयं भी किसी की निन्दा नहीं करनी चाहिए। वन्दमान शब्द उसी की ओर संकेत कर रहा है।

उत्कृष्ट शंका समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

शंका– मुझे पता है कि ईश्वर सर्वव्यापक और निराकार हैं ओर वही हमारे वास्तविक माता–पिता , पालक–पोषक और रक्षक हैं। फिर भी मैं ईश्वर को अपने माता–पिता की तरह प्रेम नहीं कर सकती। मुझे क्या करना चाहिये, जिससे मैं परमपिता परमात्मा को माता–पिता की तरह प्रेम कर सकूँ?

समाधान– बार–बार ईश्वर के बारे में चिंतन करें, बार–बार सोचें। हम जी रहे हैं, चौबीस घंटे वायु का प्रयोग करते हैं, श्वास लेते हैं। अगर पाँच मिनट शुद्ध वायु न मिले, तो शांतिपाठ (मृत्यु) हो जायेगा। जीना कठिन है। इस तरह से सोचिये। कौन है जो हमारे जीवन की रक्षा कर रहा है। एक–एक मिनट, एक–एक सेकंड कौन हमको यह शुद्ध वायु (ऑक्सीजन) दे रहा है, जिसके कारण हम जी रहे हैं। कौन हमारे लिए हर एक ऋतु में अलग–अलग सब्जियों बनाकर भेज रहा है। अलग–अलग फल बनाकर भेज रहा है। अलग–अलग वनस्पतियाँ, औषधियाँ और तरह–तरह की चीजें बनाकर भेज रहा है। ऐसे ईश्वर के गुणों पर विचार करें। कौन है, जो हमारे कर्मों का हिसाब रख रहा है। एक–एक कर्म का हिसाब रखता है। चौबीस घंटे में हम पता नहीं कितने कर्म करते हैं मन से, वाणी से, शरीर से। कौन है, जो हमारे सारे कर्मों का हिसाब रखता है? कौन है, जो हम पर अन्याय करने वालों को दण्ड देता है? उन अन्यायकारियों से जो हमको नुकसान होता है, हानि होती है, उस नुकसान की पूर्ति करता है, हमारी क्षतिपूर्ति करता है। कम्पन्सेशन देता है। वो कौन है? मनुष्यों में तो काई नहीं दिखता। और हम जो अच्छे कर्म करते हैं, उन अच्छे कर्मों का फल हमको कौन देता है? हमें मनुष्य जन्म देता है, आगे बार–बार देता है। अनादिकाल से दे रहा है और भविष्य में अनन्तकाल तक देता रहेगा। इतने अच्छे–अच्छे लोग संसार में जिसने उत्पन्न किये हैं। अच्छे–अच्छे धार्मिक लोग, देशभक्ति लोग, ईमानदार लोग, वीरपुरुष, ऐसे अच्छे–अच्छे साधु, संत, महात्मा, विद्वान लोग, जो धर्म की रक्षा करते हैं, देश की रक्षा करते हैं, दूसरो को सुख देते हैं। सब दुनिया का भला करते है। कौन है, उनको भेजने वाला। और यह सब करके भी वो भगवान हमसे कितनी फीस लेता है, कितना शुल्क लेता है, कुछ भी नहीं। इस तरह से बार–बार सोचें, तो आपके मन में प्रेम बढ़ेगा, रुचि बढ़ेगी। और माता–पिता वाले उदाहरण की बात थी, तो वैसे भी सोचें। जैसे छोटा बच्चा होता है, पन्द्रह दिन का, महीने का, उसका सारा काम उसकी माँ ही करती है। खिलाना, पिलाना, सुलाना, जगाना, नहलाना, धुलाना सारा काम उसकी माँ ही करती है। उस बच्चे को तो कुछ होश ही नहीं, वो कुछ कर नहीं सकता। तो उस तरह से भी सोचें। जैसे माता छोटे बालक की सब प्रकार से रक्षा करती है, उसका सारा ध्यान रखती है। ऐसे ही हम छोटे बच्चे की तरह हैं। हमारी बुद्धि क्या है, कुछ भी नहीं है। क्या खाना, क्या नहीं खाना, कुछ भी पता नहीं। उल्टा सीधा खाते रहते हैं, शरीर को बिगाड़ते रहते हैं। और एक लम्बी सीमा तक ईश्वर हमारी रक्षा करता है, रोगों से बचाता रहता है। इतनी व्यवस्था उसने हमारे शरीर में कर रखी है। और जब बहुत ज्यादा सीमा पार हो जाती है, अतिक्रमण बहुत हो जाता है, तब जाकर के भगवान हमारे शरीर में कुछ छोटा सा रोग पैदा करता है। और वो भी सावधान करने के लिये। सावधान! बहुत लापरवाही कर ली, जागो, लापरवाही मत करो। जानकारी करो, क्या खाना, क्या नहीं खाना। और उस हिसाब से खाओ–पिओ, और अपने शरीर की रक्षा करो। तो इस तरह से हम बहुत कम जानते हैं कैसे जीना चाहिये, कैसे सोचना चाहिये, कैसे बोलना चाहिये, कैसे व्यवहार करना चाहिये, कैसे उठना–बैठना चाहिये, बहुत कम जानते हैं। और फिर भी ईश्वर हमें पता नहीं अंदर से कैसे–कैसे सूचना देता रहता है चौबीस घंटे यह उसकी बड़ी कृपा है। इस तरह जब हम सोचते हैं तो हमें लगता है कि हम वैसे ही बच्चे हैं, पन्द्रह दिन के, एक महीने के, दो महीने के और हमारी सब रक्षा भगवान् ही कर रहा है। कब, कैसे बुद्धि देता है, कब, क्या अंदर से सुझाव देता है, और जब हम उसकी बात मान लेते हैं, तो हमारा बहुत बच्छा काम निपट जाता है। हमारा बहुत अच्छा भला हो जाता है। हम अनेक आपत्तियों से , दुर्घटनाओं से बच जाते हैं। इस तरह से सोचें। तो माता–पिता की तरह हमारे अंदर भी रुचि आयेगी, कि जैसे हम माता–पिता को चाहते हैं, उनसे प्रेम करते हैं, उनका उपकार समझते हैं, ऐसे हम ईश्वर का भी उपकार समझेंगे। ऐसा बार–बार सोचें। तो हम उनके माता–पिता की तरह प्रेम करने की स्थिति प्राप्त कर लेंगे।

शंका– अनेकता में एकता कैसे हो सकती है?

समाधान– बिल्मुल नही हो सकती। अनेकता में एकता बिल्कुल नहीं हो सकती। अनुकता बिल्कुल अलग चीज है, एकता बिल्कुल अलग चीज है। दोनों में सौ प्रतिशत विरोध है। यह सब झूठ है, धोखा है। जनता को बेवकूफ बनाते हैं ये नेता लोग जो कहते हैं 'अनेकता में एकता है।' अनेकता में एकता कभी नहीं होती। अनेकता शब्द का अर्थ ही यह है– जहाँ एकता न हो।'

दर्शन योग महाविद्यालय
रोजड़ (गुजरात)

वीर विनायक सावरकर

●डॉ. रूपचन्द 'दीपक'

(पुण्य तिथि 26 फरवरी)

महाराष्ट्र में नासिक जिले के ग्राम भगूर में 28 मई 1883 को विनायक का जन्म हुआ। उनके माता–पिता का नाम श्रीमती राधाबाई और पंडित दामोदर पंत सावरकर था। बड़े भाई गणेश और छोटे भाई नारायण भी अग्रिम पंक्ति के क्रान्तिकारी हुए हैं।

जन्मजात क्रन्तिकारी

वर्ष 1897 में पूना में प्लेग की बीमारी फैल गयी। उसकी रोक–थाम हेतु अंग्रेज़ अधिकारियों ने विशेष पग न उठाये। इस पर चाफेकर बन्धुओं ने प्लेग कमिश्नर मिस्टर रैण्ड को गोली मार दी। दोनों भाइयों को फाँसी का दण्ड दिया गया। इसने विनायक के मन में अंग्रेज़ी साम्राज्य के प्रति विद्रोह का बीच बो दिया। वे धनुष–बाण और तलवार चलाना सीखाकर बालकों को संगठित करने लगे थे। जब 22 जनवरी, 1901 को ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया का देहान्त हुआ और शोक सभाएँ हुईं तो विनायक ने कहा कि इंग्लैण्ड की महारानी हमारे दुश्मन देश की रानी है, अतः हम शोक क्यों मनाएँ?

विदेशी वस्त्रों की होली

मैट्रिक के बाद विनायक राष्ट्रभक्ति की कवितायें लिखने लगे। उनका लोकमान्य बाल बंगाधर तिलक से परिचय हो गया। बी.ए. करते हुए उन्होंने वर्ष 1905 में पुणे के बीच बाजार में विदेशी वस्त्रों की होली जलायी। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता तिलक जी ने की थी। विनायक को कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया, किन्तु परीक्षा देने की अनुमति मिल गयी और उन्होंने बी.ए. उत्तीर्ण कर लिया।

अविनव भारत

बी.ए. करके विनायक सावरकर ने अपने विश्वस्त साथियों को एकत्र करके 'अभिनव भारत' नामक संस्था की स्थापना की जिसका उद्देश्य भारत की स्वाधीनता के लिए सशस्त्र क्रान्ति को मूर्त्त रूप देना था। संस्था का प्रत्येक सदस्य धर्म और शिवाजी के नाम पर यह प्रतिज्ञा करता था कि मैं अपने राष्ट्र की पूर्ण स्वतंत्रता के लिए अंतिम सांस तक संघर्ष करूंगा और संस्था के कार्यक्रमों की गोपनीयता बनाए रखूंगा। संस्था का समापन स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 10 मई 1952 को किया गया।

श्यामजी कृष्ण वर्मा

ऋषि दयानंद के शिष्य पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा एक प्रखर देशभक्त और संस्कृत के विद्वान् थे। वे लन्दन में 'इण्डिया हाउस' का संञ्चालन करते और *'इण्डियन सोशियोलाजिस्ट'* नामक पत्र निकालते थे। उन्होंने इंग्लैण्ड की पढ़ने के लिए प्रतिभाशाली छात्रों को छात्रवृत्तियां देने की घोषणा की थीं। लोकमान्य तिलक के कहने पर विनायक दामोदर सावरकर को छात्रवृत्ति प्राप्त हुई और वे 9 जून 1906 को बम्बई से रवाना हुए। सावरकर लन्दन जाकर 'इण्डिया हाउस' में ठहरे। उसी वर्ष उन्होंने *'फ्री इण्डिया सोसाइटी'* की स्थापना की जिसके सदस्य भाई परमानन्द, मदनलाल ढींगरा, लाला हरदयाल आदि बने। शीघ्र ही श्यामजी कृष्ण वर्मा 'इण्डिया हाउस' का सञ्चालन सावरकर पर छोडकर फ्रांस चले गये

1857 का स्वातंत्र्य समर

विनायक सावरकर ने लंदन विश्वविद्यालय में कानून के अध्ययन हेतु प्रवेश लिया था। किन्तु वे अधिकांश समय ब्रिटिश लाइब्रेरी में बैठकर '1857 का स्वातंत्र्य समर' नामक ग्रन्थ लिखने में लगा रहे थे। मराठी भाषा में यह पुस्तक वर्ष 1908 में पूर्ण हुई। ब्रिटिश सरकार भनक को लगते ही पुस्तक छपने से पहले प्रतिबन्धित हो गई। वहाँ के भारतीय विद्यार्थियों ने इसका अंग्रेज़ी में अनुवाद किया जो 1908 में हालैंड से छपा। इस पुस्तक ने भारतीय देशभक्तों को सशस्त्र क्रान्ति की प्रबल प्रेरणा दी है। वीर सावरकर को कारावास होने पर मैडम भीखाजी कामा एवं हरदयाल ने दूसरा संस्करण प्रकाशित किया। बाद में सरदार भगत सिंह ने गुप्त रूप से वर्ष 1928 में तीसरा संस्करण प्रकाशित कराया था। पुस्तक में सतारा से प्रारम्भ देशी रियासतों के अधिग्रहण से लेकर मंगल पाण्डे के विद्रोह, 10 मई की मेरठ क्रान्ति, बहादुरशाह की असमर्थता, राणा कुँवर सिंह के संघर्ष, रानी लक्ष्मीबाई की अनुपम वीरता, तात्या टोपे की फाँसी, बेगम

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

आर्य समाज की प्रगति को और तीव्र करना है

● हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

आज आर्य समाज प्रचार के अभाव में ब्राह्मणवाद, पौराणिकता को आस्था आदि चैनलों पर काफी आकर्षणीय बनाया जा रहा है। आज भी राधाकृष्ण को नचाया जा रहा है। धर्म के नाम पर फलित ज्योतिष वाले, लोगों को कर्मानुसार सुख-दु:खादि फलों की प्राप्ति न बताकर, शनि आदि नक्षत्रों के प्रभाव बता रहे हैं। ऋषि दयानन्द के समय तथाकथित भगवान, धर्म, मत, पन्थ, सम्प्रदाय उतने नहीं थे जितने कि आज हैं। प्रतिमाओं का पूजन बढ़ता ही जा रहा है। शिव के यथार्थ कौन समझ कर कावंड़िया लोगों का अंधविश्वास काफी बढ़ गया है। धर्म के नाम पर नशा करते रहते है, यह सब शिवपुराण और वाममर्गियों के चलाई हुयी मनमानी प्रथाओं का परिणाम है। अधिकांश लोग वैदिक धर्म के अप्रचार से धर्मान्ध होते जा रहे है। हर छोटे बड़े शहर और ग्राम में प्रतिमाओं की पूजा एवं विवाह आदि का संस्कार कार्य कराते रहते हैं, सब कोई (यजमान) अपने ब्राह्मण पंडितों की बातें को मान रहे हैं। आज हमारे देश में जितना अन्य मतो का सम्मान है, उतना आर्यसमाज का नहीं है। सांई बाबा आदि के सम्बन्ध उन्हें भगवान मानना चाहिये कि नहीं विचार-विमर्श के लिये टी.वी. चैनल पर साधु सन्तों, मौलवी और अन्य विद्वानों को ही देखा जाता है।, आर्य समाज के महात्माओं, विद्वानजनों को नहीं।

आर्य समाज की प्रतिमा केवल आर्य परिवार तक ही सीमित है वह अपने को अभी तक सार्वदेशिक नहीं बना सका है। संस्कार कार्य के लिये आर्य पुरोहितों को आर्य लोग ही पूछते हैं अन्य नहीं। वैसे आर्य समाज में आर्य पुरोहितों की बड़ी कमी है। जहाँ आर्यों का समाज अधिक है वहां के लिये तो काई भी संस्कार कार्य उनसे कराने में असुविधा नहीं, पर जहाँ उनका समाज नहीं है और जिस नगरी में केवल एक ही आर्य सज्जन रहते हैं उनके लिये उनके यहाँ पर आर्य पुरोहित का पहुंचना संभव नहीं है। इसलिये स्थानीय ब्राह्मणों से ही उन्हें संस्कार कार्य कराना होता है।

मैं (पं बंगाल के जिला बीरभूम में एक छोटा शहर) मुरारई में रहता हूँ यहाँ प्रायः सभी जाति के लोग रहते हैं। बिहारी, पंजाबी, माड़वाडी और बंगाली तथा मुसलमानों की संख्या इधर अधिक है। यहाँ अनेक मतों के प्रचारक आते रहते हैं और सब प्रचार के माध्यम से लोगों को अपना शिष्य बनाते रहते हैं।

मैने आर्य पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने के लिये (जो हिन्दी थोड़ा जानते हैं) अपने पड़ोस के लोगों से अनेक बार कहा किन्तु कोई ग्राहक बनना नहीं चाहा। यहाँ एक व्यवसायी समिति के सैकरेट्री दिलीप पिपड़ा जी हैं, वे हमारे सिद्धान्तों से भलीभांति परिचित हैं, उन्हें एक प्रति 'आर्य जगत' का विशेषांक भी दे दिया है। उनका कहना है कि आप जिन विचारों को लिखते हैं, यहाँ मुरारई के लोगों को पल्ले पड़ने वाला नहीं है। ये इन उच्च विचारों को नहीं समझ पायेंगे। यहाँ किसी को समय नहीं है। सब अपने अपने कारोबार में व्यस्त रहते हैं।

हमारी सुपुत्री कमला ने दि. 21. 12.2015 को फोन किया कि पिताजी आप मिर्जा चौक चले आइये, यहाँ मंदिर के निकट हरिद्वार से आये गायत्री परिवार के लोग शकुण्डों में गायत्री महायज्ञ कर रहे हैं, यहाँ मेला लगा हुआ है। मैने उससे कहा कि यह एक झारखण्ड के सांवताली एवं कुसंस्कारी क्षेत्र में उत्तम काम हो रहा है, इससे वहां के लोगों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ेगा। वायुमण्डल का शोधन भी होगा। मैं तो जा नहीं सकूंगा क्योंकि तबियत ठीक नहीं है और ठण्ड भी काफी पड़ रही है।

आर्य समाज की प्रतिमा केवल आर्य परिवार तक ही सीमित है वह अपने को अभी तक सार्वदेशिक नहीं बना सका है। संस्कार कार्य के लिये आर्य पुरोहितों को आर्य लोग ही पूछते हैं अन्य नहीं। वैसे आर्य समाज में आर्य पुरोहितों की बड़ी कमी है। जहाँ आर्यों का समाज अधिक है वहां के लिये तो काई भी संस्कार कार्य उनसे कराने में असुविधा नहीं, पर जहाँ उनका समाज नहीं है और जिस नगरी में केवल एक ही आर्य सज्जन रहते हैं उनके लिये उनके यहाँ पर आर्य पुरोहित का पहुंचना संभव नहीं है। इसलिये स्थानीय ब्राह्मणों से ही उन्हें संस्कार कार्य कराना होता है।

आर्य समाज क्या कर रहा है? जहाँ-जहाँ उन लोगों का समाज है उसी में वे लोग चक्कर काट रहे हैं। पर सभा से बाहर निकलकर आर्य विद्वानों का दल भारत के हर जिले में वैदिक धर्म के प्रचार एवं यज्ञ का आयोजन नहीं कर पा रहे हैं।

ऋषि दयानंद को देश-विदेश के लोग कैसे जाने? इसलिये कि वे वैदिक धर्म से सबको परिचित कराना चाहते थे। एक अकेला ही *(यदि तोरे डाक सुने कोई ना आसे तोबे एकला चलोरे के अनुसार)* भारत के प्रायः राज्यों में गये और सबको सत्यार्थ मार्ग का दर्शन कराते रहे और वह महान तपस्वी निर्भय होकर वेद विरुद्ध प्रतिमा पूजन का खंडन कर, वेदानुकूल योग यज्ञ करने का आदेश देते रहे। उनमें विद्या और सत्य बल की प्रतिभा थी। समझदार लोग उनके सिद्धान्त को मानने लगे और सबको लेकर उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना कर दी, ताकि समाज के विद्वान संन्यासी और महात्मा जन, देश-विदेश में जाकर विश्व को आर्य बनाने का प्रयत्न करते रहें।

21वीं सदी में रामदेव को बच्चा-बच्चा कैसे जाना? उन्होंने पहले हरिद्वार में पतंजलि के नाम से योग शिविर लगाना प्रारंभ किया और स्वयं योगासन प्राणायाम करते और सबसे कराने लगे, साथ ही आयुर्वेदीय औषधियों भी बनवाकर देने लगे जिनके द्वारा बड़े नेता और अफसर लोगों का रोग अच्छा होने लगा। धीरे-धीरे उनका नाम फैलने लगा, और तब बाबा आस्था चैनल पर आ गये। इस प्रकार अनेक राज्यों में जाते रहे और योग शिविर लगाते रहे। इन सब क्रियाओं से उन्हें काफी धन प्राप्त होने लगा जिसके चलते आयुर्वेदीय फैक्टरियों द्वारा औषधियों (पतंजलि के नाम से) बनने लगी। आज वे 1अरब से अधिक धन के मालिक हैं। आज उनका व्यापार सारे भारत में हो रहा है।

तात्पर्य यह कि जब तक सभी आर्य प्रतिनिधिसभायें ऋषि दयानन्द के स्वप्नों के 'आर्यसमाज' की प्रगति के लिये एक होकर भारत के हर राज्य के हर जिले में उस (आर्य समाज) की स्थापना नहीं करेंगी तब तक ऋषि के उच्च वैदिक विचारों से सभी वंचित रहेंगे।

हम लेखक जन यही चाहते हैं कि ऋषि के इतिहास एवं उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्त, योग-यज्ञ के विज्ञान को भारत का बच्चा-बच्चा जानें। आज सबके मन में मूर्तिपूजा आदि का अन्धविश्वास इतना भर गया है कि यदि उनकी आस्था के विरुद्ध कोई वेदानुकूल सुझाव देता है अथवा उनके आडम्बर का खण्डन करता है तो वह का शत्रु अथवा नास्तिक बन जाता है। इसलिये प्रचारक लोग पाखंडियों के दल से डरते भी हैं। हमारे विचार से प्रचारक विद्वान किसी मत का खंडन न करके केवल वैदिक धर्म के अनुसार भाषण दें। यम, नियम, धर्म के लक्षण और योगाभ्यास के नियमों का विर्णन करें। अमुक मत वाले किनको भगवान मानकर पूजते हैं, इससे कोई मतलब नहीं। केवल यही कहना है कि ईश्वर एक है, सत्य एक है, धर्म का मूल वेद है और वह सब सत्य विद्या का पुस्तक है। वेद सबसे प्रेमपूर्वक व्यवहार और मित्रता उत्पन्न करने का आदेश देता है। आर्य मंदिर से बाहर प्रचारक लोग जहाँ जायें, वहां के मान्य व्यक्तियों से संपर्क करके पहले यज्ञ का अनुष्ठान करें, इसका विरोध कोई नहीं कर सकता। उसके बाद वैदिक धर्म के अनुसार आचार-विचार और चरित्र सुधार के सम्बंध में भाषण दें, तथा वैदिक ग्रन्थ भी वितरित करें। इन सब कार्यों के लिये आर्यों से धन इकट्ठा करें।

इस प्रकार जब तक वैदिक धर्म के प्रचार के प्रति तत्परता सबमें उत्पन्न नहीं होगी तब तक आर्य समाज की प्रगति केवल पत्र-पत्रिकाओं तक ही सीमित रह जाती है, उन सबका विचार जन-जन तक नहीं पहुँच सकता। उसके लिए एक आर्य समाज का आस्था आदि चैनल होना भी बहुत ज़रूरी है।

, यदि इस समय आर्य समाज में कोई सर्वमान्य नेता होता तो कतिपय नेताओं में जो बैर-विरोध है उसे मिटाकर सबको आर्य समाज को आगे बढ़ाने के लिय परामर्श देता। किन्तु दु:ख का विषय है कि छोटे-छोटे नेता स्वार्थ और पदों के लालची बनाकर आपस में ही मुकदमेबाजी कर रहे हैं। (इसलिये आर्य समाज की प्रतिमा घट रही है) अतः हम सब यही चाहते हैं कि किसी नेता या विद्वान को आगे आकर चुनाव संबंधी झगड़े समाप्त कराने चाहियें तभी आर्यसमाज के संगठन को बचाया जा सकता है। सबके मिलन से सारे देश में आर्य समाज को और आगे बढ़ाया जा सकता है।

मु. पो. मुरारई
जिला बीरभूम (पं. बंगाल) 731219

वर्तमान समाज में शूद्र संज्ञक कोई नहीं

● मनमोहन कुमार आर्य,

वेद एवं वैदिक साहित्य में मनुष्य समाज को गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुसार चार वर्णों ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र में वर्गीकृत किया गया था। गुण, कर्म व स्वभाव पर आधारित इस वैदिक वर्ण व्यवस्था में चारों वर्णों के लिए गुणों व कर्तव्यों का निर्धारण किया गया था। आज इस वर्ण व्यवस्था का स्थान जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था ने ले लिया है जो कि वर्णव्यवस्था की पूरक न होकर विरोधी व्यवस्था है। वर्तमान में अधिकांश लोग प्रायः शर्माजी, वर्माजी, गुप्तजी और दासजी आदि अनेकानेक जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करते हैं जिनका गुण, कर्मों व स्वभाव से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। **इस आधार पर आज जो सामाजिक स्थिति है उसमें न कोई ब्राह्मण है, न कोई क्षत्रिय, न कोई वैश्य और न कोई शूद्र है।** प्राचीन ऐतिहासिक ग्रन्थों रामायण एवं महाभारत में इन जाति सूचक शब्दों का कहीं उल्लेख नहीं है जिसका अर्थ है कि उस काल में जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का आरम्भ नहीं हुआ था। वर्तमान समय में हम जिन्हें ब्राह्मण वर्ण का व्यक्ति कहते हैं उनमें अधिकांश अशिक्षित भी हैं वे प्राचीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण नहीं कहे जा सकते। अनेक ऐसे लोग है जो ब्राह्मण कुलों या जातियों में उत्पन्न हुए हैं परन्तु वह कार्य सेना या पुलिस में, व्यापार व वाणिज्य के या सरकारी सेवा में चपरासी, क्लर्क व अधिकारी का कर रहे हैं। इन लोगों में अपवाद स्वरूप शायद ही किसी ने वेदों के दर्शन किये हों, उन्हें पढ़ना व समझना तो दूर की बात है। इनमें प्रायः सभी मूर्ति पूजा आदि पौराणिक कृत्यों के अनुसार पूजा आदि करते हैं जो कि वेदविरुद्ध कृत्य हैं। इसी प्रकार स्वयं को ब्राह्मण कहने व मानने वाले लोग वेद विरुद्ध अवतारवाद, फलित ज्योतिष, छुआछूत, गुण–कर्म–स्वभाव की उपेक्षा करके अपने बच्चों के विवाह अपनी ही जाति में करते हैं। क्या ये गुण, कर्म व स्वभाव व व्यवसाय पर आधारित प्राचीन वा वेदकालीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण कहलाये जा सकते हैं? हमारा अध्ययन कहता है कि कदापि नहीं। इसी प्रकार से अन्य तीन वर्णों क्षत्रिय, वैश्य व शूद्रों की भी स्थिति है। **यदि निष्कर्ष रूप में देखें तो आज प्राचीन वर्ण व्यवस्था के अनुसार कोई भी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र की अर्हता से अलंकृत न होने के कारण इन वर्णों का प्रतिनिधित्व नहीं करता। इसलिए सर्वत्र वर्णसंकर होने से सभी मनुष्य हैं, आर्य हैं, वैदिक धर्म एवं पौराणिक मत का मिश्रण हैं, यह स्वीकार करना पड़ता है। इस निष्कर्ष के अनुसार यह भी सुनिश्चित है कि देश व समाज में वेदों की भावना व मान्यता के अनुसार शूद्र कोई भी नहीं है या फिर सभी वर्णों में शूद्र हैं और शूद्रों में अनेक व बड़ी संख्या में ब्राह्मण, क्षत्रिय एवं वैश्य हैं।**

महात्मा गांधी जी ने अपने समय में स्वच्छता पर बल दिया था। उन्होंने स्वयं मल–मूत्र साफ कर दूसरों को एक उदाहरण प्रस्तुत किया था कि वे भी ऐसा करें जिससे समाज व देश स्वच्छ रह सकें। आज भी हमारे बड़े–बड़े राजनेता जिनमें प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी भी हैं, स्वयं को जनता का प्रधान सेवक कहते हैं और हाथ में झाड़ू उठाकर सफाई करते हुए दिखते व दिखाते हैं। उनका अनुकरण कर स्वामी बाबा रामदेव, श्री बालकृष्ण, अनिल अम्बानी, सानिया मिर्जा, शशि थरूर, आदि भी सफाई कर रहे हैं। मध्य काल में यदि कोई ऐसा करता तो उसे शूद्र व अस्पर्श्य कहा जाता। अतः मध्यकाल की परिभाषा के अनुसार तो ये शूद्र हैं परन्तु ऐसा मानना अज्ञान व अन्धविश्वास है, और कुछ नहीं। ये सभी लोग समाज के प्रतिष्ठित लोग हैं और जो हैं, वस्तुतः वही हैं और वही रहेंगे। **इसी कारण से हमारा मानना है कि आज मध्यकालीन विचारों के अनुसार कोई मनुष्य शूद्र नहीं है।** इस बात को आजकल के ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य कहे जाने वाले लोगों को मनसा, वाचा व कर्मणा समझना है। नगरों में रहने वाले तो इसे कुछ समझ सकते हैं परन्तु हमारे गांवों में इतनी अज्ञानता फैली हुई है कि वहां यह सन्देश पहुंचता ही नहीं और यदि पहुंचता भी है तो वे इसे समझने के लिए तैयार नहीं होते। यह हकीकत है कि प्राचीनकाल में जो शूद्र होते थे, उनका समाज में पूरा सम्मान था। उनका कार्य मल–मूत्र साफ करना नहीं अपितु विद्वान्, ऋषियों व ब्राह्मणों के घरों में भोजन आदि बनाना व अन्य सेवा कार्य होते थे। आज यह कार्य सभी जातियों के लोग करते हैं। समय ने करवट ली और महाभारत काल के बाद मध्यकाल आया, ज्ञान–विज्ञान समाप्त हो गया, अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियों व फलित ज्योतिष जैसी समाज के लिए हानिकारक व मिथ्या बातों ने समाज में स्थान पाया और एक वर्ग को शूद्र कहकर उससे छुआछूत का अमानवीय व्यवहार किया जाने लगा। आज हमारे सफाई का काम करने वाले भाइयों के कार्यों की महिमा का गान हो रहा है, जो कि समयानुकूल और उचित ही है। जब हम विदेशों में जाते हैं तो वहां स्वच्छता को देखकर उनकी प्रशंसा करते हैं। वहां स्वच्छता करने वाले लोगों के प्रति वह दृष्टि नहीं है जो हमारे देश में रही है और अब भी कुछ कम या अधिक जारी है। अब आधुनिक काल चल रहा है, अतः हमें अपनी दृष्टि बदलनी चाहिये जो यह हो सकती है कि संसार के सभी लोग समान हैं, कोई न छोटा है, न बड़ा है, सभी ईश्वर के अमृत पुत्र व पुत्रियां हैं और इस कारण से सभी हमारे परिवार के सदस्य हैं। इस दृष्टि से जीवन जीकर समाज में एक क्रान्ति लाई जा सकती है जिसकी कि आज आवश्यकता है और जो स्वामी दयानन्द जी व महात्मा गांधी जी सभी महापुरुषों का स्वप्न रहा है।

चुक्खुवाला, देहरादून

वेद की दुन्दुभि बजती रहेगी

● डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

न कभी रुकी है न कभी रुकेगी, वेद की दुन्दुभि बजती रहेगी। आज सहस्रों विद्वान उपदेशक भजनोपदेशक ग्रामों से लेकर महानगरों तक में वेद की पावन गंगा बहा रहे हैं और समाज को जाग्रत कर रहे हैं। यही नहीं भारत देश में ही वेदों का डंका बजाया है, आर्यों ने मॉरीशस, सूरीनाम, अमेरिका, म्यांमार आदि अनेक देशों में वेद प्रचार कर दुनियां को वेद के पावन ज्ञान से अवगत कराया है क्योंकि वेद ज्ञान है ही संसार के लिए।

आर्य समाज के छठे नियम में कहा है कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना"। वेद तो हैं ही संसार के लिए किसी एक विशेष जाति, वर्ग, स्थान आदि के लिए नहीं हैं। इनमें मानव मात्र के लिए ज्ञान है, मानवता हेतु ज्ञान है।

ऋषि दयानन्द ने आर्य समाजों की स्थापना इसीलिए की थी कि यहां से बिना रुके वेद प्रचार होता रहे। इस लेख को लिखने का उद्देश्य यह बता देना है कि आर्य समाज अपनी आजीविका चलाने अथवा धनार्जन करने के लिए नहीं है। आर्य समाजों में आज कल ऐसे अनेक व्यक्ति आ रहे हैं जो भौतिक जगत की चकाचौंध से ग्रस्त हैं, धन कमाने का धन्धा करना ही अपना उद्देश्य समझते हैं और कार्यक्रमों की औपचारिकता मात्र ही करते हैं। एक–दो औपचारिकताएं कर फोटो आदि खिंचवाने, उन्हें प्रचार माध्यमों में छा जाने की उत्सुकता रहती है। आज आर्य समाजों में अनेक स्थानों पर बखेड़ा है। मुकदमे चल रहे हैं, कहीं ताले पड़े हैं, यदि चल भी रहे हैं तो उनमें कोई आर्य संन्यासी व विद्वान आता जाता या उपदेश देते दिखाई नहीं देते, सूने पड़े रहते हैं।

फिर भी ऋषि दयानन्द के जलाए अनेक दीप आज वेदज्ञान का प्रकाश कर रहे हैं। जहाँ आर्य श्रद्धालु जन हैं वह वेद प्रचार किए बिना नहीं रहते। उनके हृदय में तड़प है, एक लगन है, यही श्रद्धा तो ऋषि दयानन्द के समय थी। पुराने आर्यों ने अपने घर उजाड़ कर आर्य समाज बना दिए। दिन–रात प्रचार किए। गुरुदत्त, पं. लेखराम, भगवद्दत्त, स्वामी श्रद्धानन्द, कुँवर सुख लाल, महात्मा अमर स्वामी जैसे सहस्रों आर्य क्रान्तिकारियों ने वेद की दुन्दुभि बजाकर वेद का चारों प्रकाश किया और अपना जीवन ही समर्पित कर दिया। उस समय ग्राम–ग्राम, नगर–नगर आर्य समाजों की भव्य शोभा यात्राएँ निकला करती थीं। जनता आर्य समाजों के कार्य–क्रमों को देखने उमड़ पड़ती थी। रेल, बस तक रुक जाती थीं। आर्य समाजों में स्थान तक नहीं मिलता था। कार्यक्रमों का आयोजन नगर से बाहर बड़े मैदानों में किया जाता था। ग्राम–ग्राम व नगरों में प्रत्येक घर पर ओ३म् ध्वज लहराता दिखाई देता था। यही नहीं आर्य समाजी जिधर भी निकल जाते थे लोग उन्हें बड़े आश्चर्य व उत्सुकता से देखा करते थे कि आज पता नहीं किस रहस्य का पर्दा हटाएंगे, पता नहीं क्या बोलेंगे। आर्यों के विचार ईश्वर, आत्मा, प्रकृति, देश भक्तों, इतिहास व अंधविश्वास, पाखण्डों को, अन्याय को दूर करने हेतु होते थे, देश प्रेम की गाथाएं होती थीं। फैलते गुरुडम व मत मतान्तरों के विरुद्ध होते थे। शास्त्रार्थ महारथी शास्त्रार्थ करते थे। निर्णय के तट पर पुस्तक में आर्य समाज के स्वर्णिम क्षण प्रकाशित हैं। लाहौर में दो बड़े आर्य समाज थे एक आर्य समाज बच्छो वाली दूसरा आर्य समाज अनार कली। आर्य समाज बच्छो वाली का वेद प्रचार उत्सव लोहे के तालाब (वाटर वर्क्स) के पास मैदान में तथा आर्य समाज अनारकली का उत्सव डी. ए.वी. मिडिल स्कूल में होता था। पंजाब, सिंध, बलोचिस्तान, जम्मू और कश्मीर के हजारों आर्य जन समूहों में यहां जाया करते थे। आर्य समाज बच्छोवाली के उत्सव में स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी (साधु आश्रम हरदुआगंज) श्री स्वामी

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

जीना कैसे

● यश वर्मा

ओ३म् शन्नो देवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तु नः।

इस मन्त्र का भावार्थ है कि सबका प्रकाशक, सबको आनन्द देने वाला और सर्वव्यापक ईश्वर, मनोवांछित फल के लिए तथा पूर्णानन्द की प्राप्ति के लिए हमारा कल्याण करें। हम पर सुख की सर्वदा सब ओर से वृष्टि करें।

परमात्मा से हम सब प्रकार का सुख व आनन्द चाहते हैं। वो तो है ही सदा सुख देने वाला व कल्याण करने वाला। लेकिन क्या हमें पता है कि हमारा जीवन है क्या, क्यों प्रभु ने हमें बनाया। हमें इस संसार में जीना कैसे है।

मानव मात्र जीवन में सुरक्षा चाहता है। इसलिए वह भोजन, वस्त्र, भवन, धन दौलत का संग्रह करता है, दान, तप, पुण्य, सेवा, धर्म–कर्म करता है। तो क्या वह सुरक्षा का स्थायी समाधान कर पाया है। जिस जीवन की सुरक्षा करना चाहता है वह जीवन क्या है। यदि इसे समझने में भूल हो गई तो सब व्यर्थ हो जाएगा। मानव ने जो भी साधन अपनाए यथा भवन निर्माण किए, सम्पत्ति अर्जित की, बड़े–बड़े युद्ध किए, पहरे लगाए, परन्तु मृत्यु ने सभी प्रयत्न विफल कर दिए। निश्चित ही मानव से कोई भूल हो गई। इस मरणधर्मा शरीर को ही अपना स्वरूप समझ लिया। जब प्रभु ने मानव को बनाया तो आज के इस आपा धापी के युग का कवि इस आधुनिक युग की पाश्चात्य सभ्यता को पनपता देखकर कह उठाः–

इस जड़ नूँ तू सजाया,
करके लीपा पोती वणाया,
दे के रूप रंग श्रृंगार,
इस जड़ विच चेतन पाया,
ते सारी दुनिया नूँ लुभाया।
सुन्दर नैन दो सजाए,
इक नक दो कन्न बणाए,
सुन्दर मुखड़ा बणा के,
रस वाली रसना लगा के,
सारी दुनिया नूँ भरमाया,
ओ३म तेरी जड़ ने,
सारियाँ दी मत मार दित्ती ए।

मानव ने इस जड़ रूपी शरीर को ही अपना व दूसरों का स्वरूप समझ लिया है लेकिन इसे अमर बनाने के सभी प्रयत्न विफल हो गए। मानव से बहुत बड़ी भूल हो गई। वह अनित्य को ही नित्य समझने लगा। जो शरीर सदैव रहना ही नहीं है, परिवर्तनशील है, उसे समझता है कि सदा रहेगा। ऐसा मानना रेत पर भवन बनाने अथवा कागज की नाव द्वारा समुद्र को पार करने के समान समझना है। फिर ऐसी भूल पर और भूलें करता गया। इस अपवित्र शरीर को पवित्र समझ बैठा, इस पर गर्व किया, इस पर आकर्षित हो बैठा, मोहित हो गया। हीरे–मोती रख दो और दस वर्ष बाद देखो तो वैसे मिलेंगे। लेकिन दस व्यक्ति एक कमरे में एक रात्रि के लिए रख दो और खिड़की दरवाजे बन्द कर दो तो प्रातः कमरा दुर्गन्ध से भरा होगा और सांस लेना भी कठिन होगा।

इतना ही नहीं, फिर तीसरी भूल और कर ली। खाना–पीना, भोग विलास को ही आनन्द मान बैठा। इन इन्द्रियों से भोगने वाले सुख को ही सब कुछ मान बैठा और इसी भूल से नास्तिकता का जन्म हुआ। मानव इस जगत की मोह माया में ऐसा फँस गया कि आत्मा–परमात्मा को ही भूल गया। हम अपने को अर्थात् आत्मा को और परमात्मा को कितना जानते हैं। शब्दों में शायद हम थोड़ा सा ब्यान भी कर दें जोकि शाब्दिक ज्ञान है। परन्तु हम अनुभव नहीं कर पाते क्योंकि हमें इस विषय का पता ही नहीं, कभी विचार ही नहीं आता, विचार आ भी जाए तो प्रयत्न ही नहीं करते।

जब मानव पर मौत का प्रहार हुआ तो वह रोया–चिल्लाया, ये आज से नहीं लाखों वर्षों से हो रहा है, पिता, पुत्र, माता, भाई, बहन, सखा, पति, पत्नी सब इसका शिकार होते आए हैं। मानव इस शरीर को अमर बनाना चाहता है, इसे स्थायी बनाना चाहता है। मान लो प्राणी पैदा हों और मरें नहीं तो इस संसार में कितनी भीड़ मच जाएगी। पैर रखने का स्थान भी न रहेगा। जीना दूभर हो जाएगा।

जीवन एक प्रवाह है। एक जीवन समाप्त होता है तो तुरन्त दूसरा जीवन मिल जाता है। यह प्रवाह कभी समाप्त नहीं होता। बहुत से विद्वानों ने तो मृत्यु को कल्याण रूप बताया है और कहा है कि इसका स्वागत करना सीखो। चलता पानी नदी कहलाता है और खुशहाली लाता है। वही पानी एक तालाब में खड़ा होता है तो दुर्गन्ध देता है। नवीनता ही जीवन है। जीवन की शाश्वता क्या है? एक सजीव तत्त्व जो कभी मरता नहीं और पैदा नहीं होता, जिसे गीता के अध्याय–2 श्लोक 20 में कहा हैः–

न जायते म्रियते वा कदाचिन्
नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्या शश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

आत्मा न जन्मता है, न मरता है, पहले भी था और आगे भी रहेगा। अजन्मा, नित्य, शाश्वत, पुरातन है। शरीर नष्ट होने पर भी रहेगा।

जीवात्मा की नित्यता के कारण ही तो हम लाखों, करोड़ों वर्षों से जीवित हैं। आगे भी जीवन की कामना करते हैं। हम कभी मृत्यु से हारते नहीं। आत्मा कहती है कि मैं मौत की भी मौत हूँ। मैंने तेरा कई बार मर्दन किया है। तू मुझे मार नहीं सकती। मैं अजर, अमर, नित्य हूँ। जिसने मुझे शरीर समझा उसने भूल की है। संयोग वियोग तो प्रकृति का धर्म है। जन्म–मरण तो बहु–आयामी है। यह तो विकास के लिए है। जो संसार को असार बताते हैं, धोखा, स्वप्न, माया बताते हैं वो गहरी नींद में हैं। परम प्रभु के द्वारा मानव जीवन रूपी पुष्प यों ही तो नहीं खिलाया गया। इसका बहुत बड़ा प्रयोजन है, उद्देश्य है। यह तो सत्य को पाने का, प्रकाश की ओर जाने का, अमृत तत्त्व पाने का साधन है।

असतो मा सदगमयः, तमसो मा ज्योर्तिगमया,
मृत्योर्मा अमृतगमया।

यह जीवन प्रभु ने दिया है जड़ से चेतन की ओर जाने के लिए, प्रकृति से पुरुष के मिलन हेतु, बाहर से भीतर पदार्पण करने के लिए। जीवन मिला है हिंसा, असत्य, अज्ञान, अन्याय के विरुद्ध क्रान्ति के लिए।

परमात्मा की श्रेष्ठतम कृति है मानव जीवन, जिसमें विचार शक्ति है और साथ में उसे प्रकट करने के लिए वाणी का समावेश है। हमें अपने विचारों पर विशेष ध्यान देना है। इन्हीं से ही मानव के जीवन की दिशा और दशा बनती व बिगड़ती है। जो दुःख व निराशा की बात करते हैं वे सदैव दुःखी रहते हैं। जो पॉज़ीटिव विचार रखते हैं वो सुख पाते हैं, उनके जीवन में सदा उत्साह, उल्लास, आनन्द बना रहता है। वे कर्मशील बने रहते हैं।

एक दृष्टांत है कि जब रवीन्द्र नाथ टैगोर अपनी अन्तिम अवस्था में थे तो उनका एक मित्र आकर कहता है कि प्रभु से प्रार्थना करो कि पुनः इस नरक में न आना पड़े। तब टैगोर कहते हैं कि मैं तो प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि यदि मुझे योग्य समझो तो मुझे फिर इस देवभूमि में भेजना जहाँ सुख है, आनन्द है, फल, फूल, नदियाँ पर्वत, सूर्य, चाँद, सितारे, जीव, जन्तु हैं जो हर समय आपकी कारीगरी का आभास करवाती हैं। यह है दर्शन, जो प्रभु के साथ जोड़ता है।

इस संसार में 4 प्रकार के मनुष्य हैं। एक हैं प्रवाही, जो इस संसार के प्रवाह में अन्धाधुन्ध बहे चले जा रहे हैं, बिना विवेक–अविवेक का विचार किए। दूसरे हैं कर्मी जो विचार तो करते हैं परन्तु प्रवाही को देखकर फिर उसी धारा में बह जाते हैं। तीसरे हैं जिज्ञासु, जो दृढ़ता वाले, विवेक, वैराग्य वाले हैं परन्तु कभी प्रवाही के चक्कर में आ गए तो प्रवाही या कर्मी बन जाते हैं। चौथे हैं ब्रह्मज्ञानी, जो कभी नहीं भटकते। वो दूसरों को भी ब्रह्मज्ञान देने वाले हैं जैसे महर्षि दयानन्द। अथर्ववेद का एक मन्त्र है (19.71.1)

स्तुता मया वरदा वेदमाता, प्रचोदयन्तां, पावमानी द्विजानाम। आयुः प्राणं, प्रजां पशुं, कीर्ति द्रविणम ब्रह्मवर्चसम। महं दत्वा व्रजत ब्रहमलोकम।

परमेश्वर कहते हैं कि मैंने आपको वेदमाता दी है जो समस्त ज्ञानों व लाभों की निर्मात्री है, जिसकी कुच्छी (गोद) में व्यक्ति द्विज बन जाता है। ये वेरों को देने वाली है। यह आयु, प्राण, संतान, पशु, यश, धन–दौलत व ब्रह्म तेज देने वाली है व एक अदभुत चीज़ अर्थात् परलौकिक सुख देने वाली है। परन्तु एक शर्त है कि पहले ये सब वापिस कर दो।

यह सब वापिस करना तो बहुत कठिन कार्य है परन्तु फिर भी सम्भव है। गीता में भी और वेद में भी इसका बहुत सरल उपाय बता दिया है। आसक्ति रहित हो जाओ, त्यागभाव से संसार के भोगों को भोगो, इदन्नमम अर्थात् ये सब प्रभु का ही है। बस भाव ही तो बदलना है।

वेद में तो यहाँ तक कहा है कि मैं सोने के बर्तनों में भोजन करूँ अर्थात् खूब धन कमाऊँ। धन तो सबको चाहिए अन्यथा विकास ही नहीं होगा। फिर धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की कामना भी की गई है। धर्म के रास्ते पर चल कर धन की और मोक्ष की बात की गई है। धन और अध्यात्म दोनों ही मानव के पूर्ण विकास में सहायक हैं। पंछी कभी एक पंख से नहीं उड़ सकता।

परमेश्वर सर्वव्यापक है। इसलिए वह एक ब्रिज का कार्य करता है। वह हम सबको आपस में जोड़ता है चाहे वह जड़ पदार्थ हो अथवा चेतन पदार्थ। वह ही हम सबका आधार है। हमें उसके साथ जीना है, सुनना है, देखना है व सारे कर्म उस प्रभु संग रहकर करने हैं जैसा कि इस मन्त्र में आया है–

ओ३म् तच्चक्षु र्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत। पश्मेय शरदः शतं जीवेम शरदः शतं श्रृंणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीना स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

उस प्रभु को जान लेना व पा लेना अर्थात् अनुभव कर लेना ही इस जीवन का सार है। मान लो दिल्ली पहुँचने के लिए 200 किलोमीटर चलना है तो 200 किलोमीटर चलना होगा। उससे कम चलने पर दिल्ली नहीं पहुँचेंगे। इसी प्रकार जितना विवेक, वैराग्य, प्रेम, श्रद्धा, विश्वास, ज्ञान, निष्काम कर्म, उपासना चाहिए उतना करना होगा। हाँ, थोड़ा किया हुआ व्यर्थ नहीं जाएगा, कुछ रास्ता अवश्य तय होगा। हमें प्रभु के साथ जीना है, उसी की ओर मुख करके चलेंगे तो अवश्य ही उसके पास पहुँचेंगे।

ओ३म् के ही ध्यान से,
और ध्यान से ही योग तक,
जीवन के अन्तिम लक्ष्य तक यह ओ३म् ही पहुँचाएगा।

मन्त्री, आर्य समाज
मॉडल टाउन, यमुनानगर,
मो. 09416446305

पाकिस्तान : जिहाद और अफगानिस्तान की छाया में!

● हरिकृष्ण निगम

पाकिस्तान इन द शैडो ऑफ जिहाद एण्ड अफगानिस्तान : लेखिका – मेरी एन वीवर; मूल्य रुपये 395; पृष्ठ 285 प्रकाशक वाइकिंग (अमेजन डॉट काम एवं फ्लिय कार्ट के माध्यम से आन लाइन क्रय करने पर घर बैठे मुद्रित मूल्य से कम पर उपलब्ध)

जिस तरह शीत युद्ध के समय में अमेरिका में सोवियत संघ के विरूद्ध राजनीति–प्रेरित और सनसनीखेज घटनाक्रमों और दिलचस्प समाचारों को एक सत्यकथा के रूप में प्रकाशित किया जाता था उसी तरह आज पाकिस्तान की एक अराजक देश के रूप में अन्दरूनी राजनीति पर बहुधा विवादभरी चर्चायें चलती रहती हैं। मेरी एन वीवर ने हाल के अपने ग्रंथ में पाकिस्तान के अनैतिक, मानवद्रोही दृष्टिकोण, भारत–विरोधी रुख और आज की मध्ययुगीन मनोवृत्तियों की पृष्ठभूमि पर खुल कर चर्चा की है।

11 सितम्बर 2001 के विश्व व्यापार केन्द्र पर, आत्मघाती वायुयान चालकों के हमले के बाद आतंकवाद पर अंग्रेजी में कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं पर मेरी एन वीवर की टिप्पणियों में एक पत्रकार का आकर्षक रूप झलकता है। दुनियाँ के दूरदराज स्थानों में हुई आतंकवादी घटनाओं में पाकिस्तान में हाथ पाया गया है। सभी इस्लामी अतिरेकियों की जड़ें पाकिस्तान में हैं और लगता है जैसे यह अराजक, विघटित होता हुआ देश कुख्यात अन्तर्राष्ट्रीय का जमघट सा बनता जा रहा है।

यद्यपि यह पुस्तक मूल रूप में पश्चिमी पाठकों के लिए लिखी हुई है पर क्योंकि वे स्वयं पाकिस्तान में एक दशक से ऊपर रह चुकी हैं इसलिए उनके लेखन में गम्भीरता के साथ साथ पारदर्शिता एवं सदाशयता भी है। वे आधिकारिक रूप से निष्कर्ष निकालती हैं कि पाकिस्तान की राजनीति खण्डित है, शासन तंत्र लकवाग्रस्त है और वहाँ का प्रजातंत्र पूरी तरह से अधूरा। दिन प्रतिदिन समाचार पत्रों में पाकिस्तानी खबरों को पढ़नेवालों को उस देश के बारे में कुछ विशेष नई जानकारी नहीं मिलेगी सिवाय उसकी चिरपरिचित कमजोरियों, विक्षिप्तता एवं सैनिकतंत्र की घृणा पर आधारित पकड़ के।

मजे की बात यह है कि इस्लामाबाद के कायदे कानून उत्तर पश्चिम के सीमान्त प्रदेश के जनजातीय इलाके में कभी भी लागू नहीं हुए और वहाँ के लोग पंजाबी नियंत्रण को अपने लिए अपमानजनक मानते हैं। यही भावना बलूचियों एवं पठानों से खुलकर उभरी है। अमेरिका द्वारा अफगानिस्तान में एक समय सोवियत संघ के विरुद्ध मुजाहिदीनों को दिए स्टिंगर प्रक्षेपास्त्र स्थानीय हथियारबंद माफिया के हाथ में पड़ गए थे। इसी तरह सिंध प्रान्त के किसान अभी भी सामन्ती युग में रहते हैं। बहुधा मजदूरों को कहीं कहीं आज भी लोहे की जंजीरों में बाँध कर रखा जाता है। एन वीवर एक संवाददाता की शैली में अपनी कहानी कहती हैं और भारतीय पाठकों के लिए रोचक मसाला भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराती हैं। प्रथम पुरुष "मैं" में लिखे वर्णन पाठकों को सहज की आकर्षित कर लेते हैं।

करांची मदरसों का गढ़ है जहाँ के 850 सेमनरियों में देशी धर्मान्ध कारखानों के उत्पाद के रूप में बाहर निकलते है। वहाँ के हजारों प्रशिक्षणार्थियों में 1100 सिर्फ विदेशी हैं। मलेशियाई, थाई, अफरीकी नागरिकों के अलावा कुछ पश्चिमी देशों के नए धर्मान्तरित श्वेत भी यहाँ मिल सकते हैं। इस्लामी आतंकवाद की जड़ें इन्हीं हजारों मदरसों में है।

इस ग्रंथ के कुछ रोचक वर्णन पाकिस्तान के अरब के भ्रष्ट शेखों के रिश्ते भी उजागर करते हैं। ऊपर से कट्टर वे स्वयं अपने शौकों और ऐशो आराम के लिए दूसरे देशों में जाकर क्या करते हैं, इसका भी वर्णन है। उदाहरण के लिए पाकिस्तानी शासन ने सोहन चिड़िया या 'बस्टर्ड' का शिकार प्रतिबंधित किया है पर जब पश्चिमी एशिया से जाड़ों में दर्जनों शेख उनके शिकार के लिए पाकिस्तान आते हैं तब लगता है जैसे सामन्ती युग वापस आ गया है। जब सिन्ध व बलूचिस्तान के रेगिस्तानी इलाकों में वे आते हैं तब स्थानीय प्रशासन उनके लिए हर सम्भव सुविधाओं से युक्त तम्बुओं का शहर तक बना डालते हैं और उनकी गाड़ियों के काफिलों के स्वागत और बाद तक रखरखाव का पूरा इंतजाम किया जाता है। उनके निजी वायुयानों को उतारने के लिए अस्थायी हवाई पट्टी बनाई जाती है और सेवा करने के दर्जनों अर्दली नियुक्त किए जाते हैं। लेखिका के अनुसार व्यापक गरीबी के बीच उनकी शान शौकत और सरकार का स्वयं 'बस्टर्ड' जैसे प्रतिबन्धित पक्षी का शिकार करवाना अजीब लगता है। इसी पक्षी के मांस को अरब शेख यौन क्षमता के लिए गुणकारी मानते हैं। शेखों से करोड़ों डालर की सहायता पाने के लालच में सरकार के सभी विभाग अपना मुंह बंद कर लेते हैं।

मेरी एन वीवर की बेनजीर भुट्टो से गहरी दोस्ती थी और यद्यपि वह पत्रकारों से निजी बातें नहीं करती थीं पर वीवर अपवाद थी। वह बेनजीर और उनके परिवार के साथ पजेरो गाड़ी में कई बार छुट्टियां मनाने भी जा चुकी थी। लेखिका से अत्यन्त व्यक्तिगत बातों को बताने में भी बेनजीर नहीं झिझकती थीं। बेनजीर को जिया–उल–हक के शासन काल में जेल में भेज दिया गया था जिसकी यातना वे कभी नहीं भूल सकी थीं और जिया उल हक के लिए उनके मन में अपार घृणा थी। शायद इसीलिए बेनजीर और उनके पति आसिफ जरदारी के ऊपर भ्रष्टाचार के आरोपों पर वे बहुत संक्षेप में लिखती हैं। भुट्टो परिवार की स्वयं बेनजीर से अन्दरूनी खींचतान चलती थी। उसका भाई मीर मुर्तजा और माँ नसरत उनके साथ नहीं थे।

क्षेत्रीय राजनीति के बारे में लेखिका का कहना है कि अफगानिस्तान में पाकिस्तान सदैव एक घनिष्ठ मित्र जैसी सरकार चाहता था क्योंकि यह उसकी तेल की राजनीति का अभिन्न अंग था। पाकिस्तान में अपने तेल के स्रोत न के बराबर हैं और अफगानिस्तान के उत्तर में स्थित कजाखिस्तान में उसे तेल खरीदना पड़ता था। इसलिए पाकिस्तान अफगानिस्तान की भूमिका सदैव महत्वपूर्ण मानता था। आज भी यह स्पष्ट है कि पश्चिम की अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कजाखिस्तान से तेल और गैस को अफगानिस्तान के जरिए लाने के लिए कड़ी प्रतिद्विन्द्विता करती रही हैं। यहाँ तक कि अनेक अमेरिकी तेल कम्पनियाँ तालिबानी शासन के समय उनसे सुरक्षित पाइप लाइनों के लिए वार्ता भी करती थीं। इस पक्ष को आज भी गुप्त रखना चाहती हैं।

इस ग्रंथ में पाकिस्तान की उभरती कलाशनिकोव संस्कृति पर भी प्रकाश डाला गया है। क्योंकि श्रीमती वीवर सन 1980 से 2001 तक पाकिस्तान में 'न्यूयार्कर' समाचारपत्र की संवाददाता रही चुकी हैं इसलिए अधिकाधिक रूप से कई बार संकेत करती हैं कि पाकिस्तान का कोई भविष्य नहीं है। एक ओर उसका अस्तित्व भारत के विरुद्ध घृणा और प्रतिशोध पर आधारित हैं दूसरी ओर बदलती हुई दुनियाँ के अनुरूप वहाँ के समाज को बदलना नहीं आता है और मध्ययुगीन मानसिकता के कारण वहाँ का पढ़ा लिखा वर्ग भी संशयग्रस्त है। पाकिस्तान का उच्च वर्ग जिसमें सैनिक अधिकारी, सउदी धन पर पल रहा मौलवी वर्ग और सामंती मिजाज के बड़े किसान अपने गढ़े हुए कल्पित प्रेतों के कारण अलग–अलग पड़ गया है। इन्हीं के आधार पर वीवर अपना मूल प्रश्न दोहराती हैं– क्या पाकिस्तान वर्तमान राजनीतिक अस्थिरता के दौर के बाद जीवित बचेगा?

इस पुस्तक में विस्तृत चर्चा है कि किस तरह अस्सी के दशक में जिया–उल–हक का शासन अमेरिकी गुप्तचर एजेन्सियों से सोवियत संघ के विरुद्ध अफगान मुजाहिदीनों को संगठित करने के लिए करोड़ों डालर प्राप्त कर रहा था। वीवर का मानना है कि तालिबान के उदय और धर्मान्ध इस्लाम की जड़ें गहरी करने में अमेरिका की भी बड़ी भूमिका रही है। जब सन 1989 में सोवियत संघ अफगानिस्तान से वापस लौट गया अमेरिका ने भी जब तक के अपने चहेते धर्म योद्धाओं से हाथ हटा लिए। नया परिदृश्य यह था कि करोड़ों के हथियारों के साथ प्रशिक्षित अरब, एशियाई और अफगान योद्धा जिहाद के नए लक्ष्यों के साथ तैयार बैठे थे। पाकिस्तान भी अपनी भावी रणनीति में इन्हीं धर्मान्धों को मोहरा बनाने के लिए स्वतंत्र था। जिहाद की विचारधारा को पाकिस्तान ने बलूचिस्तान और उत्तर पश्चिम सीमान्त प्रान्त में सबसे अधिक हवा दी।

जिया–उल–हक जिहादी समूहों का जनक था और जरनल मुशर्रफ ने वे जिहादी विरासत में पाए थे। वीवर के अनुसार दोनों की मानसिक सोच एक ही थी और वे दोनों राजनीतिज्ञों व नागरिक प्रशासकों से घृणा करते थे। दोनों ने ही अमेरिका को समर्थन दिया था। जहाँ जिया ने सी.आई.डी. की सहायता से राष्ट्रवादी अफगान संघर्ष को सोवियत संघ के विरुद्ध पवित्र धर्म युद्ध में बदल दिया था जनरल मुशर्रफ ने यही काम कश्मीरी आतंकवादियों से भारत के विरुद्ध करवाया। मजे की बात यह है कि दोनों ही दुनियाँ भर में ढिंढोरा पीटते रहे कि उनके हाथ साफ हैं। दोनों ही मौलानाओं और जिहादी समूहों के द्वारा पाकिस्तान को सशक्त धर्मतंत्र में बदलना चाहते थे यद्यपि मुशर्रफ ऊपर से उदारवादी इस्लाम का ढोंग रचते रहे हैं।

मेरी एन वीवर ने कहा है कि पाकिस्तान आधुनिकता की दौड़ में पिछड़कर अन्तर्राष्ट्रीय समुदाय में अप्रासंगिक बन चुका है। वे पाकिस्तान के भविष्य के प्रति सशंकित हैं और उन्होंने इसके अनेक संज्ञाएं और विशेषण गढ़े हैं। अराजकता पूर्ण असफल राज्य, अगला युगोस्लाविया, दिशाहीन और भ्रमित देश, आदि। कुल मिलाकर यह एक अत्यन्त पठनीय और रोचक ग्रंथ है।

ए–1002, पंचशील हाइट्स
महावीर नगर, कान्दिवली (प.)
मुम्बई–400067

पत्र/कविता

ईश्वर सब प्राणियों के अन्दर स्थित है परन्तु मनुष्य उसे बाहर ढूंढते हैं।

भगवदगीता के अठारहवें अध्याय में श्री कृष्ण अर्जुन को उपदेश देते हुये कहते हैं–

ईश्वरः सर्वभूतानाम हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति भ्राम्यन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।

हे अर्जुन शरीररूपी यन्त्र में आरूढ हुये सम्पूर्ण प्राणियों को अर्न्तयामी परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मो के अनुसार भ्रमण कराता हुआ सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।

तमेव शरणम् गच्छ सर्वभावेन भारत।
तत्प्रसादात् परं शांतिं स्थानम् प्रापस्यसि शाश्वतम्।।

हे भारत तू सब प्रकार से उस परमेश्वर की ही शरण में जा। उस परमात्मा की कृपा से तू परम शांति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा।

तेरहवें अध्याय के 13वें श्लोक में श्री कृष्ण ने ईश्वर के बारे में कहा 'वह सब ओर हाथ पैर वाला, सब ओर नेत्र, सिर और मुख वाला तथा सब ओर कान वाला है। क्योंकि वह संसार में सब को व्याप्त करके स्थित है। इसके बाद 24 वे श्लोक में कहा–वह सर्म्पूण इन्द्रयों के विषयों को जानने वाला है, परन्तु वास्तव में सब इन्द्रियों से रहित है तथा आसक्ति रहित होने पर सबका धारण पोषण करने वाला और निर्गुण होने पर मी गुणो को भोगने वाला है।

गीता के उपरोक्त श्लोकों में ईश्वर को निराकार बताया गया है। अजुर्वेद 40/8 में कहा गया है कि ईश्वर नस नाड़ियों से रहित है। यजुर्वेद 32/3 में कहा है **'न तस्य प्रतिमाऽस्ति** अर्थात् उसकी कोई मूर्ति नहीं है।

भागवत पुराण स्कन्ध 10 अध्याय 84 श्लोक 11 में कहा गया है पानी के तीर्थ नहीं होते और पत्थर की मूर्तियां देवता नहीं होती और दीर्घ काल तक पूजने पर भी यह पवित्र नही करते। इसी प्रकार श्लोक 13 में कहा कि जो बात, पित्त, कफ इन तीन धातुओं से बनी देह में आत्माभिमान, कलत्र आदिक में ममता मिटटी, काष्ठ, पत्थर, आदि की बनी हुई मूर्तियों में देवता–बुद्धि और पानी में तीर्थ–बुद्धि रखता है वह मनुष्य होने पर भी नीच गधा है।

परन्तु फिर भी लोग ईश्वर को बाहर ढूड़ते फिरते हैं और भिन्न–भिन्न प्रकार की मूर्तियों की पूजा करते हैं तथा इस अंधविश्वास के कारण दु:ख उठाते हैं तथा जनता की भीड़ में फंस कर कई तो मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। निराकार ईश्वर को तो योग ध्यान द्वारा ही साक्षात्कार किया जा सकता है।

भगवद्गीता के कुछ श्लोकों में तो श्री कृष्ण को ही ईश्वर बताया गया है जो वेद विरुद्ध है और बाद की मिलावट है। गीता कोई स्वतन्त्र ग्रंथ नही है यह तो महाभारत ग्रंथ का एक भाग है जिसमें बहुत प्रक्षेप हुआ है ऐसा सब विद्वान मानते हैं।

वास्तव में मूर्तिपूजा से सन्त महन्तों तथा पण्डे पुजारियों को करोड़ों रुपये की आमदन है इसलिये कोई इस को छोड़ना नही चाहता।

अश्विनी कुमार पाठक
सी 233, नानक पुरा नई दिल्ली–110 021

****

वैदिक धर्म सनातन है

सुनो, सुनो ए दुनियावालो ! वैदिक धर्म सनातन है।
जितनी पुरानी सृष्टि, उतना ही वेद पुरातन है।।
राम–चित्र की पूजा करते चरित्र नहीं अपनाते हैं।
योगेश्वर थे जो, उनका भोगेश्वर रूप दिखलाते हैं।
पूर्वजों के चरित्र छोड़ जो चित्र– अपनाते हैं।
होते हैं अरक्षित वे तो, अपना अस्तित्व गँवाते हैं।।
राम–कृष्ण की सच्ची पूजा वैदिक धर्म स्थापन है।।
सुनो, सुनो ए दुनिया वालो........................
धन से ईयाइयत, हिंसा से हुआ इस्लाम का विस्तार है,
हिंसा–विरुद्ध जन्मा बौद्ध, कर रहा मांस का आहार है,
पुराणों का भी क्या कहना, न गप्प का कोई पारावार है,
व्यक्ति–जात मतों का न कोई पूर्ण–सत्य आधार है।।
इन मिथ्या मतों के कारण, अभी वेद–सूर्य तमाच्छन्न है।।
सुनो, सुनो ए दुनिया वालो........................
बाइबिल की धरा चपटी, सूरज भ्रमण करता है,
कुरान का विज्ञान–नबी चाँद के टुकड़े करता है,
बौद्ध–मत–सिद्धान्त भी, विज्ञान पर कहाँ ठहरता है,
पौराणिक गप्प भी सत्य पर खरा नहीं उतरता है।।
विज्ञान ने इन ग्रंथों का हिला दिया अब आसन है।।
सुनो, सुनो ए दुनिया वालो........................
सर्वज्ञ–ईश–ज्ञान में, विज्ञान–विरोध का स्थान नहीं है,
कहते हैं जो वेद, कहता आधुनिक विज्ञान वही है,
वेद–विज्ञान दोनों में धरती सदा गतिमान रही है,
ग्रहों सहित सूर्याकर्षण में यह वर्त्तमान मही है।।
आज विज्ञान ही कर रहा वैदिक सत्य का सत्यापन है।।
सुनो, सुनो ए दुनिया वालो........................
कहता है 'ब्राउन' विज्ञान वैदिक धर्म का आधार है,
'जैकोलियट' के शब्दों में, वैज्ञानिक वेद के विचार हैं,
'ह्वीलर' की दृष्टि में विद्युत्–विमान ऋषि–आविष्कार हैं,
स्नायु–तंत्र–ज्ञान, ऋग्–अवदान 'रैले' के अनुसार हैं।।
विद्वानों के कथनों से हो रहा अब वेद का विज्ञापन है।।
सुनो, सुनो ए दुनियावालो ! वैदिक धर्म सनातन है।।

सूर्य देव चौधरी
स्वामी श्रद्धानन्दपथ रांची (झारखण्ड)

धार्मिक भावनायें आहत हो रही हैं

यह सर्वविदित है कि हिन्दू संस्कृति में किसी भी प्रकार का मांस का सेवन असहिष्णुता का परिचायक है। केवल सेवन ही नहीं वरन् मांस का व्यापार भी असहिष्णुता का परिचायक है।

परन्तु खेद है कि विगत दो–तीन वर्षों में देश के समस्त क्षेत्रों के मांस के व्यापार में कई गुना वृद्धि दर्ज हो रही है। गली–मोहल्लों में मांस विक्रेताओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हो गई है। जन भावनाओ के विपरीत समाचार पत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार मांस के निर्यात पर केन्द्र सरकार ने अनेक प्रयास किये हैं परन्तु वह मांस के निर्यात पर अंलकुश, नहीं लगा पाये। देश के समस्त आर्यजन व धर्मप्रेमी पुनः प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से आग्रह करते हैं कि धार्मिक भावनाओं को आहत न किया जावे। असहिष्णुता की सीमा को लांघने के प्रयास देश हित में नहीं!

कृष्ण मोहन गोयल
बाजार कोट, अमरोहा

****

☞ पृष्ठ 05 का शेष

वीर विनायक....

हजरत महल की नेपाल– शरण और समर के हेतुओं का मर्मस्पर्शी विशद वर्णन है जो अंग्रेज़ों के अभिलेखों के आधार पर किया गया है। उदाहरणार्थ कुछ वाक्य प्रस्तुत हैः–

1. यदि 1857 की क्रान्ति कारतूसों के कारण प्रदीप्त हुई तो उसमें दिल्ली का बादशाह, झाँसी की रानी और नाना साहब क्यों सम्मिलित हुए?
2. अंग्रेज़ जनरल कहता है कि दिल्ली की लूट और कत्लेआम में हमने नादिरशाह को भी मात दे दी।
3. 80 वर्षीय कुँवर सिंह के हाथ में गोली लगी तो उसने स्वयं कोहनी से अपना हाथ काट लिया।
4. 'हाथ बाँधने की आवश्यकता नहीं' यह कहकर तात्या टोपे (मुख्य नाम रघुनाथ पाण्डुरंग) ने अपने हाथ से फाँसी का फन्दा पहन लिया।
5. नेपाल–नरेश को पत्र लिखने के बाद नाना साबह का क्या हुआ, इस सम्बंध में इतिहास मौन है।

भारत का पहला तिरंगा

जर्मनी में अन्तर्राष्ट्रीय सोशलिस्ट कांग्रेस हुई तो उसमें सावरकर ने भारत के प्रतिनिधि के रूप में सरदार सिंह राणा और श्रीमती रुस्तम भीखाजी कामा को भेजा। इसके लिए वीर सावरकर ने भारत का पहला तिरंगा तैयार किया था जिसमें तीन पट्टियों पर आठ कमल बने थे और 'वंदेमातरम्' लिखा था। श्रीमती कामा ने अधिवेशन में वह झण्डा फहराया था।

ग्रन्थों में पिस्तौल

वीर सावरकर ने बड़े–बड़े ग्रन्थों को बीच में खोखला करके उनमें पिस्तौल, रिवाल्वर आदि छिपाकर भारत भेजे थे। ऐसे दो–तीन पार्सल पकड़े गये और अंग्रेज़ सरकार ने सतर्कता बढ़ा दी।

अभियोगों की झड़ी

विनायक दामोदर सवारकर ने 1857 के स्वतंत्रता समर पर पुस्तक तो लिखी ही थी; 10 मई 1908 को क्रान्ति की वर्षगाँठ पर 'ऐ शहीदों' शीर्षक से चार पृष्ठ का पत्रक छपवाकर वितरित भी किया था। इसमें उन्होने स्वाधीनता–संघर्ष को आगे बढ़ाने का आह्वान किया था। सावरकर के शिष्य मदनलाल ढींगरा ने 1 जुलाई 1909 को लंदन में कर्जन वाइली को गोली मारकर दी उनकी भेजी पिस्तौल से नासिक के जिलाधीश जैक्सन की 19 अप्रैल 1909 को 16 वर्षीय अनन्त लक्ष्मण ने कान्होरे की हत्या कर दी। श्री गणेश दामोदर सावरकर को 20 वर्ष कारावास दण्ड देने के अतिरिक्त सावरकर बन्धुओं की सम्पत्ति भी जब्त कर ली गई। विनायक सावरकर के विरुद्ध षड्यंत्र एवं राजद्रोह के अभियोग पंजीकृत होने लगे। मित्रों के आग्रह से वे फ्रांस चले गये किन्तु शीघ्र लंदन लौट आये जहाँ उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

जलयान से कूदे

ब्रिस्टल जेल में बन्द सावरकर पर भारत ले जाकर मुकदमा चलाने का विधिक निर्णय हुआ। उन्हें जलमार्ग से भारत लाया जा रहा था कि वे 8 जुलाई 1910 को मार्सेल बन्दरगाह के निकट शौच के गहाने उछलकर समुद्र में कूद गये। फ्रांस की सीमा में अंग्रेज़ सिपाहियों द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस पर अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में मुकदमा किया गया किन्तु सावरकर के विरुद्ध निर्णय हुआ।

दो आजन्म कारावास

मुम्बई के विशेष न्यायाधिकरण में वीर सावरकर पर मुकदमा चलाया गया। अलग–अलग अभियोगों में मिलाकर उन्हें दो आजन्म कारावासों (पचास वर्ष) का दण्ड किया गया।उन्हें पहले डोंगरी, फिर भायखला जेल और फिर ठाणे के कारागृह भेजा गया। यहाँ छोटे भाई नारायण सावरकर भी बन्द थे। बड़े भाई गणेश पहले ही कालापानी भेजे जा चुके थे। शीघ्र ही विनायक सावरकर को भी कालापानी भेज दिया गया। वे 4 जुलाई 1911 को अण्डमान पहुँचे।

कोल्हू आदि अत्याचार

अण्डमान जेल में वीर सावरकर को तेल का कोल्हू चलाने का काम सौंपा गया जो बैल के ही योग्य माना जाता है। प्रातः उठते ही लंगोटी पहनकर कमरे में बंद होना और सायं तक कोल्हू का हत्था पकड़कर चलाते रहना नारकीय यातना का ही दूसरा नाम था। राजनीतिक कैदियों को ऐसे ही कठोर काम दिये जाते थे और अत्याचार पर अत्याचार किये जाते थे। ज्वर में भी परिश्रम कराया जाता था और समय से काम पूरा न होने पर दण्डित किया जाता था। भोजन ऐसा कि पचता न था और निर्धारित समय के अतिरिक्त मल–मूत्र त्यागने पर कठोर सजा मिलती थी। अपमान और अपशब्दों का तो कहीं हिसाब ही न था। इन कठोरतम परिस्थितियों में बन्दी प्रायः बेहोश हो जाते थे, कुछ पागल हो गये और कई की मृत्यु हो गई। वीर सावरकर ने दस वर्ष तक अण्डमान जेल में नारकीय यातनायें सहीं, कालापानी का यह अध्याय 2 मई, 1921 को बन्द हुआ। वस्तुतः राजबन्दियों को जेल–सुधारों के अन्तर्गत मुक्त किया गया और दोनों सावरकर बन्धुओं सहित सभी क्रान्तिकारी कारागार से मुक्त हो गये।

रत्नागिरी में नजरबन्द

वीर सावरकर को महाराष्ट्र के रत्नागिरी नगर में नजरबंद कर दिया गया। उन पर राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेने, वक्तव्य देने और भाषण देने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। उन्होंने जेल में नुकीले पत्थरों एवं कीलों से कवितायें लिखकर कण्ठस्थ की थीं। अब वे छद्म नामों से रचनायें छपवाने लगे। यहाँ उन्होंने अनेक पुस्तकें एवं सैकड़ों लेख ही नहीं लिखे, वरन् हिन्दू महासभा की स्थापना करायी और शुद्धि आन्दोलन को गति प्रदान की। वे 10 मई 1937 को नजरबंदी से मुक्त हुए।

सुभाष एक प्रेरक

नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने '1857 का स्वातंत्र्य समर' नामक पुस्तक से प्रेरणा पाकर विनायक दामोदर सावरकर से भेंट की। सावरकर की प्रेरणा से ही उन्होंने 'आजाद हिन्द फौज' की स्थापना की। उनकी पुस्तक आज़ाद हिन्द फौज के जवानों में वितरित की जाती थी। नज़रबन्दी से छूटने प्रर सुभाष बाबू ने वीर सावरकर से कांग्रेस का नेतृत्व सँभालने के प्रार्थना की किन्तु अहिंसावादी कार्यक्रमों से उन्होंने स्पष्ट मना कर दिया।

विभाजन का विरोध

जब महात्मा गांधी ने भारत–विभाजन का समर्थन कर दिया तो वीर सावरकर ने पाकिस्तान योजना का डटकर विरोध किया। जब नेहरू ने इसे स्थायी समाधान बाताया तो सावरकर ने चेतावनी दी कि देश के बँटवारे से यह समस्या सुलझने के स्थान पर और अधिक उलझ जाएगी। स्पष्ट है कि वीर सावरकर की दृष्टि अन्यों से अधिक स्पष्ट थी।

अगले पाँच वर्ष

पाकिस्तान को पचपन करोड़ रुपये दिलाने के लिए महात्मा गांधी ने आमरण अनशन कर दिया। इस पर नाथूराम गोडसे ने 30 जनवरी 1948 को गांधीजी की हत्या कर दी। वीर सावरकर पर नाथूराम को प्रेरणा देने का आरोप लगा, उन्हें लालकिले में बन्दी कर लिया गया, एक वर्ष तक मुकदमा चला। फरवरी 1949 को वे ससम्मान आरोपमुक्त हुए। उन्होंने जो 'अभिनव भारत' नामक संस्था बनायी थी, 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद 10 मई1952 को उसका समापन कर दिया गया। वीर सावरकर हिन्दू महासभा के अध्यक्ष के रूप में व्यस्त रहने लगे। उन्होंने स्वदेशी सरकार से सैन्य शक्ति बढ़ाने का बार–बार आग्रह किया; परन्तु वहाँ दृष्टि भेद था।

चीन–पाकिस्तान के युद्ध

वर्ष 1962 में चीन ने भारत पर आक्रमण किया तो वीर सावरकर ने दुःखी होकर काश! अहिंसा, पञ्चशील और विश्वशान्ति के भ्रम में फँसे शासनाधिकारी राष्ट्र के सैनिकीकरण का मेरा सुझाव मान लेते तो हमारी सेना पीछे न हटती। वर्ष 1965 में पकिस्तान ने कश्मीर को हड़पने के लिए युद्ध किया, प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने भारतीय सेना को लाहौर की ओर कूच करने का आदेश दिया। इस पर वीर सावरकरर आनन्द–विभोर हो उठे। परन्तु ताश्कन्द समझौते पर वे पुनः निराश हो गये।

26 फरवरी 1966

भारत–विभाजन, स्वदेशी सरकार द्वारा क्रान्तिकारियों की उपेक्षा ओर चीन आक्रमण से वे बहुत दुःखी थे। ताशकन्द समझौते पर उनकी निराशा इतनी बढ़ी की वह दूर न हो सकी। अन्त में 26 फरवरी 1966 को भारतवर्ष का यह अनमोल रतन पार्थिव देह को छोड़ गया। हमें वीर सावरकर पर गर्व है। राजनीतिक सरकारें उन्हें यथोचित सम्मान न दे पायी हैं, किन्तु भारतीय जन–मानस पर वे एक जाज्वल्यमान नक्षत्र की भाँति सदैव चमकते रहेंगे।

6105 पतंजलि योगपीठ फेज–2
हरिद्वार–249405 (उत्तराखण्ड)

☞ पृष्ठ 07 का शेष

वेद की दुन्दुभि...

अच्युतानंद जी, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी सत्यानन्द जी, स्वामी विशुद्धानन्द जी, महाशय कृष्ण जी व्याख्यान देने जाते थे। दो भजनोपदेशक ठाकुर नत्था सिंह (उटरावली बुलन्दशहर), दूसरे महाशय डोरी लाल जी (बरेली) से अवश्य जाते थे जिनकी ओजस्वी व मधुर वाणी युक्त भजन व उपदेशों को सुनने भीड़ उमड़ पड़ती थी।

महात्मा हंसराज जी, लाला दीवान चन्द जी, राम चन्द्र शास्त्री, पं. भगवद्दत्त जी, श्री राम गोपाल जी, श्री पण्डित राम चन्द्र देहलवी, कुंवर सुख लाल जो विलक्षण प्रतिभा वाले भजनोपदेशक थे जाया करते थे। यहां जहां जहां इनके कार्यक्रम होते थे भीड़ इतनी हो जाती थी कि नियंत्रण में नहीं होती थी और कार्यक्रम रोककर बड़े खुले मैदान में करना पड़ता था।

यहां आज के समय में ध्यान देने योग्य विषय है ऐसा भारत में प्रत्येक स्थान पर प्रत्येक कार्यक्रम में होता था। आर्यों के क्रान्तिकारी व तूफानी उत्सवों–कार्यक्रमों का यहां वर्णन नहीं किया जा सकता परन्तु इनसे व आर्यों के उन महान कार्यों, उत्साह, लगन व श्रद्धा को देख सुनकर सबक अवश्य लेना चाहिए। हम मिलकर एकजुट हो भारत को अखण्ड भारत बनाएँ। अपनी वैदिक संस्कृति को घर घर में पहुंचाएं, आर्य समाजों से वेद की दुन्दुभि चारों ओर बजे, पूरे वर्ष बजती रहे, समाज से आज बढ़ते घोर अन्याय, पाखण्ड व बुराइयों को दूर करें, हममें से कुँवर सुखलाल बनें, डॉ. नत्था सिंह, बनें महात्मा अमर स्वामी बने, पं. राम चन्द्र देहलवी बनें।

चन्द्रलोक कालोनी खुर्जा
मो. 8979794715

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11 \6066\2015-17
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103 \2015-17
Posted at N.D.P.S.O. ON 17-18 \02 \2016
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39\57

डी. ए. वी. आर. के. पुरम् ने आयोजित किया "हमारा प्रयास स्वच्छता की आस" कार्यक्रम

डी. ए. वी पब्लिक स्कूल आर के पुरम सेक्टर 9 में पाँचवी कक्षा के छात्रों द्वारा (हमारा प्रयास स्वच्छता की आस) बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया। भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र कुमार मोदी के द्वारा चलाये गये स्वच्छ भारत अभियान को सार्थक बनाने के लिए बच्चों ने तरह–तरह की गतिविधियों द्वारा यह दर्शाया कि हम अपने देश को कैसे स्वच्छ रख सकते हैं। छात्रों एवं अध्यापको नें रैली निकाली, पम्पलेट बाँटे, नारे लगाये, लोगों से बातचीत कर स्वच्छता का महत्व समझाया। पोस्टर बनवायें गये, श्लोगन लिखे।

कार्यक्रम की मुख्य अतिथि डॉ. निशा पेशिन (डायरेक्टर डी.ए.वी. मैनजिंग कमेटी) ने इस कार्यक्रम की बहुत सराहना की। छात्रों ने अतिथिगण एवं उपस्थित अभिभाव कों को प्रण लिया कि स्वच्छ भारत अभियान में वे हमारा साथ देंगे। अभिभावको ने बच्चों के इस प्रयास की सराहा।

श्री कोहली जी (प्रधान आर्य समाज मंदिर) सेक्टर–9 ने

कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए इस जगह के महत्व के बारे में बताया उन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस की याद दिलायी और कहा कि उन्होंने हमें "जय हिन्द" का नारा दिया था। इस अवसर पर उपस्थित डॉ. डी.वी. सेठी ने अभिभावकों को सम्बोधित करते हुए कहा–हम सभी बहुत सौभाग्यशाली हैं कि हमें डी.ए.वी. एवं आर्य समाज की संस्था में पढ़ने तथा काम करने का मौका मिला है। उन्होंने मनुस्मृति का उदाहरण देते हुए कहा–"**अदिभर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शुध्यति**" अर्थात् जल से हम बाहर की शुद्धि और सत्य से मन की शुद्धि होती है अतः अत्यन्त आवश्यक है, कि हमें बच्चों को सच बोलना सिखाना चाहिए। डॉ. अनिता जुल्का (प्रो. हेड ऑफ डिपार्टमेन्ट, एन. सी. इ आर. टी., श्रीमती पूनम सिंह (समाज सेविका) श्रीमती गिरिजा (पूर्वप्रधानाचार्य डी ए. वी. वसन्त कुज्ज), तथा श्रीमती सुरेन्द्र, एक्सपोनेन्ट ऑफ आइ. टी. सौल्यूशन्स मैनजमेंट स्कूल अफेयरम्स भी विशेष रूप से उपस्थित थीं।

डी.ए.वी.नबीनगर में मनाया गया स्मृति दिवस

डी. ए. वी. विद्यालय नबीनगर में शिक्षक एवं छात्रों की उपस्थिति में महात्मा नारायण दास ग्रोवर स्मृति दिवस मनाया गया। "महात्मा नारायण दास ग्रोवर की पहचान प्रख्यात् शिक्षाविद् प्राचार्य व एक कुशल प्रशासक ही रही है। उन्होंने भारत के पूर्वी–उत्तर क्षेत्र रुपि बरगद का एक ऐसा वृक्ष लगाया, जिसकी डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान के रुप में दो सौ पचास से ज्यादा शाखाएं बिहार, झारखण्ड, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, सिक्कम, छतीसगढ़ व मध्यप्रदेश आदि राज्यों में पुष्पित–पल्लवित हो रही हैं। महात्मा एन.डी. ग्रोवर हम सबके बीच हमेशा स्मरणीय व प्रेरणादायी बने रहेंगे। वे सच्चाई और सादगी के प्रतीक थे"। उक्त

बातें डी.ए.वी. नबीनगर के प्राचार्य बी.के. प्रसाद ने कहीं।

आयोजन की शुरुआत महात्मा ग्रोवर की पुण्यात्मा हेतु वैदिक विधि से हवन कर की गई। वरिष्ठ शिक्षक सुधीर कुमार सिंह व छात्र चन्दन कुमार, नवल कुमार, शुभम् कुमार एवं अमिष राज गुप्ता आदि के द्वारा महात्मा के प्रेरणादायी जीवन–कर्म पर विशद रुप से प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर 75 गरीब बच्चों को लंगर सुविधा के तहत भोजन प्रदान किया गया। साथ ही शैक्षणिक जागरुकता हेतु उन्हें शिक्षण सामग्री प्रदान की गई। स्वच्छता के प्रति जागरूकता के लिए टूथ ब्रश, जीभ, पेस्ट व साबुन भी उन्हें प्रदान किया गया। इस अवसर पर बतौर अतिथि श्री वी.एन. द्विवेदी उपस्थित रहे।

महात्मा एन डी. ग्रोवर की बहुआयामी प्रतिभा की याद में विद्यालय छात्र–छात्राओं के बीच भाषण प्रतियोगता, निबंध लेखन, चित्रकला, रंगोली, सुलेख, खो–खो व 100 मी. रेस जैसी प्रतियोगिताएं आयोजित हुईं। जिसमें सैकड़ो की संख्या में छात्र–छात्राओं ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। चयनित विजेता छात्र–छात्राओं को प्रमाण–पत्र व शिक्षण साम प्रदान करना निश्चित हुआ।

बी.एस. डी.ए.वी. में योग शिविर का समापन

बी.एस.डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मील रोड आरा तथा पतंजलि योगपीठ हरिद्वार तथा संयुक्त तत्वावधान में विद्यालय परिसर में निःशुल्क योग शिविर का आयोजन किया गया। विद्यालय की प्रधानाचार्या के मार्गदर्शन तथा योग प्रचारक सह सेवाव्रती डॉ. बृजमोहन जी के निर्देशन में पाँच दिनों तक विद्यालय के लगभग 3000 बच्चों तथा शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मियों ने इसका पूरा–पूरा लाभ उठाया। अंतिम दिन का विभिन्न योग के आसनों, प्राणायामों तथा आरोग्य सह देवयज्ञ के साथ इस कार्यक्रम की पूर्णाहुति हुई। डॉ. बृज मोहन जी ने "अध्यापक है भाग्य विधाता और छात्र है राष्ट्र निर्माता" उक्ति को समझाते हुए शिक्षकों को छात्रों के उज्ज्वल भविष्य निर्माण के लिए अपने आप को ज्ञान यज्ञ के विस्तार के लिए समर्जित करने को कहा। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती बिभा मिश्रा जी ने कहा कि हम जैसा सोचते हैं और करते हैं वैसा ही बन जाते हैं। अतः अपने मन को केन्द्रित कर हमेशा अच्छा सोचें, अच्छा करें और धीरे–धीरे राष्ट्र के एक सुयोग्य नागरिक बनें। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस तरह की शैक्षणिक एवं सामाजिक गतिविधियों के लिए विद्यालय परिवार सदैव तत्पर रहता है तथा भविष्य में भी ऐसे आयोजनों को बढ़ावा दिया जाता रहेगा। योग की परिभाषा देते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञानयोगी की तरह सोचें, कर्मयोगी की तरह पुरषार्थ करें और भक्तियोगी की तरह सहृदयता उभारें। इससे जो क्षमता विकसित हो उसे आत्मकल्याण–लोककल्याण के

भाव से पीड़ा और पतन निवारण में नियोजित करें। इसी में योग की सार्थकता है।

इस कार्यक्रम को सफल बनाने मे विद्यालय के सभी बच्चे एंव शिक्षक–शिक्षकेत्तर कर्मचारियों का भरपूर सहयोग सराहनीय रहा। योग शिविर के छः दिनों के कार्यक्रम पूरे जिले में चर्चा का विषय बना रहा।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.**, डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**